हल प्रश्न-पत्र	सी. बी. एस. ई. परीक्षा, 2009 (कक्षा X)	हिन्दी (पाठ्यक्रम अ)

निर्धारित समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक: 100**

DELHI SET-I **Code No. 3/1/1**

निर्देश : (i) इस प्रश्न-पत्र के **चार** खण्ड हैं—क, ख, ग, घ।

(ii) चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(iii) यथासंभव प्रश्नों के उपभागों के उत्तर क्रमश: लिखिए।

खण्ड 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

जहाँ भी दो नदियाँ आकर मिलती हैं, उस स्थान को अपने देश में तीर्थ कहने का रिवाज़ है। और यह केवल रिवाज़ की बात नहीं है; हम, सचमुच, मानते हैं कि अलग-अलग नदियों में स्नान करने से जितना पुण्य होता है, उससे कहीं अधिक पुण्य संगम स्नान में है। किन्तु, भारत आज जिस दौर से गुजर रहा है, उसमें असली संगम वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच हैं, जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्र होती हैं। नदियों की विशेषता यह है कि वे अपनी धाराओं में अनेक जनपदों का सौरभ, अनेक जनपदों के आँसू और उल्लास लिए चलती हैं और उनका पारस्परिक मिलन वास्तव में नाना जनपदों के मिलन का ही प्रतीक है। यही हाल भाषाओं का भी है। उनके भीतर भी नाना जनपदों में बसने वाली जनता के आँसू और उमंगें, भाव और विचार, आशाएँ और शंकाएँ समाहित होती हैं। अत: जहाँ भाषाओं का मिलन होता है, वहाँ वास्तव में, विभिन्न जनपदों के हृदय ही मिलते हैं, उनके भावों और विचारों का ही मिलन होता है तथा भिन्नताओं में छिपी हुई एकता वहाँ कुछ अधिक प्रत्यक्ष हो उठती है। इस दृष्टि से भाषाओं के संगम आज सबसे बड़े तीर्थ हैं और इन तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है, वह भारतीय एकता का सबसे बड़ा सिपाही और संत है।

हमारी भाषाएँ जितनी ही तेज़ी से जगेंगी, हमारे विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतना ही बढ़ता जाएगा। भारतीय लेखकों की बहुत दिनों से यह आकांक्षा रही थी कि वे केवल अपनी भाषा ही भाषा में प्रसिद्ध होकर न रह जाएँ, बल्कि भारत की अन्य भाषाओं में भी उनके नाम पहुँचें और उनकी कृतियों की चर्चा हो। भाषाओं के जागरण के आरंभ होते ही एक प्रकार का अखिल भारतीय मंच आप-से-आप प्रकट होने लगा है। आज प्रत्येक भाषा के भीतर यह जानने की इच्छा उत्पन्न हो गई कि भारत की अन्य भाषाओं में क्या हो रहा है, उनमें कौन-कौन ऐसे लेखक हैं जिनकी कृतियाँ उल्लेखनीय हैं तथा कौन-सी विचारधारा वहाँ प्रभुसत्ता प्राप्त कर रही है।

(i) लेखक ने आधुनिक संगम स्थल किसको माना है और क्यों ? 2

(ii) भाषा-संगमों में भारत की किन विशेषताओं का संगम होता है ? 2

(iii) लेखक ने सबसे बड़ा सिपाही और सन्त किसको कहा है ? 1

(iv) अलग-अलग प्रदेशों में आपसी ज्ञान किस प्रकार बढ़ सकता है ? 1

(v) स्वराज्य-प्राप्ति के उपरान्त विभिन्न भाषाओं के लेखकों में क्या जिज्ञासा उत्पन्न हुई ? 1

(vi) भाषाओं के जागरण से लेखक का क्या अभिप्राय है ? 1

(vii) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(viii) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी बताइए— 1

सौरभ, आकांक्षा

(ix) 'उल्लेखनीय' तथा 'पारस्परिक' शब्दों में प्रत्यय अलग कीजिए। 1

(x) निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थी बताइए— 1

भिन्नता, प्रत्यक्ष

2. निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी **एक** को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए— $2 \times 4 = 8$

वीर जवानो, सुनो, तुम्हारे सम्मुख एक सवाल है।
जिस धरती को तुमने सींचा
अपने खून-पसीनों से,
हार गई दुश्मन की गोली
वज्र सरीखें सीनों से।
जब-जब उठीं तुम्हारी बाहें, होता वश में काल है।
जिस धरती के लिए सदा
तुमने सब कुछ कुर्बान किया,
शूली पर चढ़-चढ़ हँस-हँस कर
कालकूट का पान किया।
जब-जब तुमने कदम बढ़ाया, हुई दिशाएँ लाल हैं।
उस धरती को टुकड़े-टुकड़े
करना चाह रहे दुश्मन,
बड़े गौर से अजब तुम्हारी
चुप्पी थाह रहे दुश्मन,
जाति-पाँति, वर्गों-फिरकों के, वह फैलाता जाल है।
कुछ देशों की लोलुप नज़रें
लगी तुम्हारी ओर हैं,
कुछ अपने ही जयचंदों के
मन में बैठा चोर है।
सावधान कर दो उसको जो पहने कपटी खाल है।

(i) 'धरती' शब्द से कवि का क्या अभिप्राय है ? उसके लिए वीरों ने क्या किया है ?
(ii) 'धरती' के दुश्मन कौन हैं ? वे किन रूपों में उसके टुकड़े करना चाहते हैं ?
(iii) 'अपने ही जयचंदों' से क्या तात्पर्य है ? उनके मन में कौन-सा चोर बैठा हुआ है ?
(iv) 'सावधान कर दो उसको जो पहने कपटी खाल है' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

अथवा

ऋषि-मुनियों, साधु-सन्तों को
नमन, उन्हें मेरा अभिनन्दन।
जिनके तप से पूत हुई है
भरत देश की स्वर्णिम माटी
जिनके श्रम से चली आ रही
युग-युग से अविरल परिपाटी।
जिनके संयम से शोभित है
जन-जन के माथे पर चंदन।
कठिन आत्म-मंथन के हित
जो असि-धारा पर चलते हैं

पर-प्रकाश हित पिघल-पिघल कर
मोम-दीप-सा जलते हैं।
जिनके उपदेशों को सुनकर
सँवर जाए जन-जन का जीवन।
सत्य-अहिंसा जिनके भूषण
करुणामय है जिनकी वाणी
जिनके चरणों से है पावन
भारत की यह अमिट कहानी।
उनके ही आशीष, शुभेच्छा,
पाने को करता पद-वंदन।

(i) भारत के ऋषि-मुनियों ने भारत को किन-किन रूपों में स्वर्णिम बनाया है ?

(ii) 'कठिन आत्म-मंथन के हित, जो असि धारा पर चलते हैं' काव्यांश का आशय स्पष्ट कीजिए।

(iii) दूसरों के लिए 'मोम-दीप-सा' जलने का क्या तात्पर्य है ?

(iv) ऋषि-मुनि किन विशेषताओं के कारण वंदनीय है ?

खण्ड 'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर निबंध लिखिए— 10

(क) आपने कुछ दिन पूर्व अपनी मनमानी टी-20 टीम का रोमांचक मैच देखा है। उस मैच का आँखों-देखा वर्णन करते हुए उसकी जय-पराजय की अनुभूतियों को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

(ख) परिवहन की दिन-प्रतिदिन की कठिनाइयों से छुटकारा पाने के लिए सीमित आय का व्यक्ति एक वाहन खरीद लेता है। किन्तु आकाश को छूती पैट्रोल की कीमतों के कारण अब उसके लिए वाहन का रख-रखाव दूभर कार्य हो गया है। ऐसी स्थिति में फँसे उस व्यक्ति की कठिनाइयों का वर्णन कीजिए।

(ग) टेलीविज़न एकाकीपन का साथी, मनोरंजन का साधन और ज्ञान-वर्धन का माध्यम है, किन्तु उसका व्यसन शरीर और मन दोनों के लिए हानिकारक भी है। इस विषय पर आप क्या सोचते हैं, अपने विचार निबंध के रूप में लिखिए।

4. धूम्रपान करने वाले मित्र को इस व्यसन के दोषों का उल्लेख करते हुए पत्र लिखकर इससे मुक्त होने की सलाह दीजिए। 5

अथवा

आप अपनी कॉलोनी/कस्बे की हितकारी समिति के सचिव हैं। समिति के वार्षिक उत्सव के अवसर पर क्षेत्र के पुलिस अधीक्षक को मुख्य अतिथि के रूप में पधारने के लिए आग्रह करते हुए एक निमंत्रण पत्र लिखिए।

खण्ड 'ग'

5. (क) निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया-पदों को छाँटकर कर्म के अनुसार उनके भेद लिखिए— 2

(i) वह रात भर जागता रहा।

(ii) सेवक एक आवश्यक पत्र लाया।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से अव्यय पद छाँटकर उनके भेद भी बताइए— 2

(i) विद्या के बिना हमारा जीवन पशु-तुल्य है।

(ii) वह बीमार है, इसलिए आज अवकाश पर है।

6. निम्नलिखित वाक्य में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए— 2

<u>मैंने</u> एक लड़ाकू <u>विमान</u> देखा।

7. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए— 3

(i) मैं नई कार खरीदूँगा। मैं पुरानी कार नहीं खरीदूँगा। (संयुक्तवाक्य में)

(ii) साहसी व्यक्ति के लिए कोई भी कार्य दुष्कर नहीं होता। (मिश्रवाक्य में)

(iii) वह पुस्तकालय गया और वहाँ उसने महाभारत पढ़ी। (सरलवाक्य में)

8. निर्देशानुसार वाच्य बदलिए— 3

(i) हम इस अपार कष्ट को सहन नहीं कर सकते। (कर्मवाच्य में)

(ii) इस छात्रा द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि दी जा रही है। (कर्तृवाच्य में)

(iii) आइए, चलें। (भाववाच्य में)

9. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों को पहचान कर उनके नाम लिखिए— 3

(i) बालकु बोलि बधौं नहिं तोही

(ii) नयन तेरे मीन-से हैं।

(iii) पाट-पाट शोभा-श्री पट नहीं रही है।

खण्ड 'घ'

10. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए— $2 \times 3 = 6$

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम वचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ व्याधि हमकौ लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।।

(i) गोपियों ने श्रीकृष्ण को हारिल की लकड़ी क्यों कहा है ? उन्होंने इस लकड़ी को किस तरह पकड़ा हुआ है ?

(ii) गोपिकाओं को योग का उपदेश कैसा लगता है और क्यों ?

(iii) गोपियाँ किसे व्याधि मानती हैं ? उसे किसे सौंपने का परामर्श देती हैं ?

अथवा

मधुप गुनगुनाकर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।
इस गंभीर अनन्त-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास
यह लौ, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य-मलिन उपहास
तब भी कहते हो—कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।

(i) कवि ने मधुप के रूप में किसकी कल्पना की है ? वह गुनगुनाकर क्या कह रहा है ?

(ii) मुरझाकर गिरती हुई पत्तियाँ किस तथ्य की ओर संकेत कर रही हैं ?

(iii) 'गंभीर अनंत नीलिमा' से कवि का क्या अभिप्राय है ? उसमें जीवन के असंख्य इतिहास लिखे जाने का क्या तात्पर्य है ?

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर दीजिए— $3 + 3 + 3 = 9$

(क) परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए क्या-क्या तर्क दिए ? राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद के आधार पर उत्तर दीजिए।

(ख) 'उत्साह' कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है ?

(ग) 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को क्या-क्या सीखें दीं ? आप किसे सबसे महत्वपूर्ण सीख मानते हैं और क्यों ?

(घ) 'संगतकार' की क्या भूमिका होती है ? कवि समाज के किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत कर रहा है ?

12. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़ कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए— $1 \times 5 = 5$

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत चड़ावन फूँकि पहारू।।

(i) प्रस्तुत काव्यांश की भाषा कौन-सी है ?

(ii) ये पंक्तियाँ किस छंद में लिखी गई हैं ?

(iii) परशुराम के लिए प्रयुक्त विशेषणों में क्या व्यंग्य छिपा है ?

(iv) काव्यांश में प्रयुक्त मुहावरे से अर्थ में क्या विशेषता आ गई है ?

(v) काव्यांश में प्रयुक्त **दो** तत्सम शब्द छाँटकर लिखिए।

अथवा

तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान
मृतक में भी डाल देगी जान
धूलि-धूसर तुम्हारे ये गात—
छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात
परस पाकर तुम्हारा ही प्राण,
पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण।

(i) मुसकान के लिए 'दंतुरित' विशेषण का प्रयोग क्यों किया गया है ?

(ii) 'धूलि-धूसर' में कौन-सा अलंकार है ?

(iii) संपूर्ण काव्यांश में किस भाव की अभिव्यक्ति हो रही है ?

(iv) काव्यांश की भाषा की कोई एक विशेषता बताइए।

(v) भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण।

13. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए— $2 + 2 + 2 = 6$

किन्तु, बालगोबिन भगत गाए जा रहे हैं ! हाँ, गाते-गाते कभी-कभी पतोहू के नज़दीक भी जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते। आत्मा परमात्मा के पास चली गई, विरहिनी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढ़कर आनंद की कोई बात ? मैं कभी सोचता, यह पागल तो नहीं हो गए। किन्तु नहीं, वह जो कुछ कह रहे थे, उसमें उनका विश्वास बोल रहा था—वह चरम विश्वास जो हमेशा ही मृत्यु पर विजयी होता आया है।

(क) पुत्र के शव के निकट बालगोबिन भगत लगातार क्यों गाए जा रहे थे और रोती हुई पतोहू को उत्सव मनाने के लिए क्यों कह रहे थे ?

(ख) पुत्र की मृत्यु भी भगत के विचार से आनन्द की बात क्यों थी ?

(ग) उनका कौन-सा विश्वास सांसारिक प्राणी की मृत्यु के प्रति निडर होने की प्रेरणा देता है ?

अथवा

फ़ादर बुल्के संकल्प से संन्यासी थे। कभी-कभी लगता है वह मन से संन्यासी नहीं थे। रिश्ता बनाने थे तो तोड़ते नहीं थे। दसियों साल बाद मिलने के बाद भी उसकी गंध महसूस होती थी। वह जब भी दिल्ली आते ज़रूर मिलते—खोजकर, समय निकालकर, गर्मी, सर्दी, बरसात झेलकर मिलते, चाहे दो मिनट के लिए ही सही। यह कौन संन्यासी करता है ?

(क) फ़ादर बुल्के को संकल्प से संन्यासी क्यों कहा गया है ? वे मन से संन्यासी क्यों नहीं लगते थे ?

(ख) फ़ादर रिश्ते बनाकर उनका निर्वाह कैसे करते थे ?

(ग) फ़ादर बुल्के का कौन-सा व्यवहार संन्यासियों के स्वभाव के अनुकूल नहीं लगता ?

14. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए— $3 + 3 + 3 = 9$

(क) 'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन में 'मन्नू भंडारी' की भूमिका को रेखांकित कीजिए।

(ख) 'स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होता है'—इस कुतर्क का खंडन महावीर प्रसार द्विवेदी ने किस प्रकार किया है ?

(ग) 'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर बताइए कि काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को परेशान करते थे?

(घ) विचार, घटना और पात्रों के बिना भी क्या कहानी लिखी जा सकती है ? यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

15. (क) 'संस्कृति' पाठ के लेखक के अनुसार 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है ? 3

(ख) सेनानी या फौजी न होते हुए भी चश्मे वाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे ? 2

16. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर दीजिए— $2+2+2=6$

(क) प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है ? 'साना साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

(ख) 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा' पाठ के आधार पर बताइए कि भारत के स्वाधीनता आंदोलन में दुलारी और टुन्नू ने अपना योगदान किस प्रकार दिया ?

(ग) हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ और किस तरह से हो रहा है ?

(घ) 'जार्ज पंचम की नाक' पाठ को दृष्टि में रखकर बताइए कि लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि 'नई दिल्ली में सब था ..... सिर्फ नाक नहीं थी।'

17. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी **एक** का उत्तर दीजिए— 4

(क) 'माता का आँचल' पाठ में बच्चे का अपने पिता से अधिक लगाव है किन्तु विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण में ही जाता है। इसका कारण स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'जार्ज पंचम की नाक' लगाने को लेकर जो चिन्ता और बदहवासी देखने को मिलती है, वह सरकारी तंत्र की किस मानसिकता को दर्शाती है ? क्या आप उसे तर्कसंगत ठहराएँगे ?

DELHI SET-II — Code No. 3/1/2

खण्ड 'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर निबंध लिखिए— 10

(क) प्रदूषण के दुष्परिणाम हमें सब जगह देखने को मिल रहे हैं। मिट्टी, जल, वायु, आकाश में से कोई भी तत्त्व इन दुष्परिणामों से अछूता नहीं रहा है। प्रदूषण के इस भयावह रूप को रोकने में एक सचेत नागरिक की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

(ख) भारत को किसानों का देश कहा जाता है किन्तु आज भी किसानों की दशा दयनीय ही बनी हुई है। वे अशिक्षा, दरिद्रता एवं पिछड़ेपन में जी रहे हैं। आपके विचार से उनकी दशा सुधारने के लिए क्या-क्या उपाय किए जाने चाहिए।

(ग) आपके विद्यालय के छात्रों ने विद्यालय के सांस्कृतिक समारोह में रंगारंग कार्यक्रम से दर्शकों को आनन्दविभोर कर दिया। उस मोहक कार्यक्रम का विवरण अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

4. छात्रावास में रहने वाले अपने छोटे भाई को पत्र लिखकर प्रात:काल नियमित रूप से योग एवं प्राणायाम का अभ्यास करने के लिए प्रेरित कीजिए। 5

अथवा

किसी प्रख्यात समाचार-पत्र के सम्पादक के नाम पत्र लखकर रेल आरक्षण व्यवस्था में हुए सुधार की प्रशंसा कीजिए।

खण्ड 'ग'

5. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए— 3

(i) मैंने एक बहुत अच्छा शब्दकोष देखा। (मिश्रवाक्य में)

(ii) पुलिस को देखते ही उसे पसीना छूट गया। (संयुक्त वाक्य में)

(iii) एक धमाका हुआ और चारों ओर चीख-पुकार मच गई। (साधारणवाक्य में)

6. निर्देशानुसार वाच्य बदलिए— 3

(i) निष्ठावान् कर्मयोगी ही सदा ऐसे काम किया करते हैं। (कर्मवाच्य में)

(ii) नेहरू जी द्वारा अपने देश के लिए समस्त सुख-सुविधाएँ त्याग दी गईं। (कर्तृवाच्य में)

(iii) वह बेचारी रो भी नहीं सकती। (भाववाच्य में)

7. निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यान से पढ़कर इनमें प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए— 3

(i) सत्य सनेह शील सुख सागर।

(ii) पहेली-सा जीवन है व्यस्त।

(iii) प्रीति नदी में पाँउ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।

8. (क) क्रियापद छाँटकर कर्म के अनुसार उनके भेद लिखिए— 2

(i) उसने जेब से बटुआ निकाला।

(ii) वह बहुत सुविधा से बैठा था।

(ख) अव्यय छाँटकर उसका भेद भी लिखिए—

(i) उसको आवश्यक कार्य था इसलिए विद्यालय न जा सका।

(ii) वह अपनी गाड़ी से कल आएगा।

9. रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए— 2

मुझे बार-बार घर की याद आती है।

DELHI SET-III — Code No. 3/1/3

खण्ड 'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर निबंध लिखिए— 10

(क) जीवन में पड़ोस का बहुत महत्त्व होता है। पड़ोसी सुख-दुख का साथी होता है, समय पड़ने पर उचित सलाह देकर मार्ग प्रशस्त करता है। उसके साथ व्यवहार में बहुत सावधानी भी बरतनी पड़ती है। इन बातों के आधार पर अपने पड़ोसी पर अपने विचार लिखिए।

(ख) भारत प्रकृति का सुन्दर पालना है, संस्कृति और सभ्यता की दृष्टि से सम्पन्न है, विभिन्न धर्मों का उपासना-क्षेत्र है तो अनेक भाषाओं का संगम-स्थल भी है। इन विशेषताओं के आधार पर 'अपना देश—भारत' पर अपने विचार एक निबन्ध के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

(ग) आपके पिताजी के स्थानांतरण (तबादला) के कारण आप ऐसे प्रदेश के एक नगर में रह रहे हैं जहाँ की भाषा, रीति-रिवाज आदि सर्वथा भिन्न हैं। भिन्नता के इस वातावरण में अपने को ढालने के लिए आपको जो प्रयास करने पड़ रहे हैं उनका विवरण एक निबंध के रूप में लिखिए।

4. आपका एक मित्र विदेश में रहता है। उसे ग्रीष्मावकाश के दौरान भारत के किसी पर्वतीय क्षेत्र में भ्रमण हेतु आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए। 5

अथवा

आपके शहर में सभी प्रकार के खाद्य पदार्थों में मिलावट का धंधा लगातार बढ़ता ही जा रहा है। अपने राज्य के खाद्य मंत्री को पत्र लिखकर इस समस्या के प्रति उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए।

खण्ड 'ग'

5. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए— 3

(i) घोड़े की सवारी करने वाला मैदान में गिर पड़ा। (मिश्र वाक्य में)

(ii) मैं प्लेटफार्म पर खड़ा रेलगाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था। (संयुक्तवाक्य में)

(iii) उसने मेहनत तो की पर कोई अनुकूल परिणाम उसके हाथ नहीं लगा। (साधारणवाक्य में)

6. निर्देशानुसार वाच्य बदलिए— 3

(i) इस पत्र को आज की डाक से भेजें। (कर्मवाच्य में)

(ii) स्वामीजी द्वारा समाज-सुधार के लिए क्या कुछ नहीं किया गया ? (कर्तृवाच्य में)

(iii) चलो, अब सोते हैं। (भाववाच्य में)

7. निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यान से पढ़कर इनमें प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए— 3

(i) मधुर मृदु मंजुल मुख मुसकान।

(ii) भानुबंस राकेस कलंकू।

(iii) तारा-सी तरुनि तामें ठाड़ी झिलमिली होति।

8. (क) क्रियापद छाँटकर कर्म के अनुसार उनके भेद लिखिए— 2

(i) श्रीराम ने धनुष-बाण उठाया।

(ii) खेत का रखवाला मचान पर बैठा था।

(ख) दो अव्यय पद छाँटकर भेद भी लिखिए— 2

(i) परिश्रम डटकर करो तो परीक्षा में प्रथम आ सकोगे।

(ii) बादल घिरे और अँधेरा छा गया।

9. रेखांकित पदों का परिचय दीजिए— 2

वह कौन है जो छत पर खड़ा है?

OUTSIDE DELHI SET-I **Code No. 4/1/1**

खण्ड 'क'

1. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

मनमोहिनी प्रकृति की जो गोद में बसा है।
सुख स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है ?
जिसके चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है,
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है ?

नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं,
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है ?
जिसके बड़े रसीले फल-कंद-नाज मेवे,
सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन-सा है ?

जिसमें सुगंध वाले सुंदर प्रसून प्यारे,
दिन-रात हँस रहे हैं, वह देश कौन-सा है ?
मैदान-गिरि-वनों में हरियालियाँ लहकतीं,
आनंदमय जहाँ है, वह देश कौन-सा है ?

जिसके अनंत धन से धरती भरी पड़ी है,
संसार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है ?
सबसे प्रथम जगत् में जो सभ्य था यशस्वी,
जगदीश का दुलारा, वह देश कौन-सा है ?

पृथ्वी-निवासियों को जिसने प्रथम जगाया,
शिक्षित किया, सुधारा, वह देश कौन-सा है ?
जिसमें हुए अलौकिक तत्वज्ञ ब्रह्मज्ञानी,
गौतम, कपिल, पतंजलि वह देश कौन-सा है ?

(i) कविता का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ii) कवि ने एक ही प्रश्न को बार-बार क्यों पूछा है ? 2

(iii) सागर और हिमालय की किस रूप में कल्पना की गई है ? 1

(iv) किन पंक्तियों में कहा गया है कि भारत की सभ्यता सबसे प्राचीन है ? 1

(v) भारत की नदियों को 'सुधा की धारा' क्यों कहा गया है ? 2

(vi) 'अनंत धन' से कवि का क्या आशय है ? 1

अथवा

ऐ अमरों की जननी, तुझको शत-शत बार प्रणाम
मातृ-भू, शत-शत बार प्रणाम!
तेरे उर में शायित गाँधी, बुद्ध, कृष्ण औ राम,
मातृ-भू, शत-शत बार प्रणाम!
हिमगिरि-सा उन्नत तव मस्तक
तेरे चरण चूमता सागर,
श्वासों में हैं वेद-ऋचाएँ
वाणी में है गीता का स्वर,
ऐ संसृति की आदि तपस्विनि, तेजस्विनि अभिराम।
मातृ-भू, शत-शत बार प्रणाम।
हरे-भरे हैं खेत सुहाने
फल-फूलों सेयुत वन-उपवन
तेरे अंदर भरा हुआ है
खनिजों का कितना व्यापक धन
मुक्तहस्त तू बाँट रही है सुख-संपति, धन-धाम!
प्रेम-दया का इष्ट लिए तू
सत्य-अहिंसा तेरा संयम
नई चेतना, नई स्फूर्ति-युत
तुझमें चिर-विकास का है क्रम
चिर नवीन तू जरा-मरण से मुक्त सबल उद्दाम।
एक हाथ में न्याय-पताका
ज्ञान-द्वीप दूसरे हाथ में
जग का रूप बदल दे, हे माँ!
कोटि-कोटि हम आज साथ में
गूँजे उठे 'जय हिन्द' नाद से सकल नगर औ ग्राम।
मातृ-भू, शत-शत बार प्रणाम।।

(i) प्रस्तुत कविता का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

(ii) खेत और उपवनों की क्या विशेषता है ? 1

(iii) न्याय और ज्ञान की बात किन पंक्तियों में कही गई है ? 1

(iv) 'कोटि-कोटि हम आज साथ में' का भाव स्पष्ट कीजिए। 1

(v) कविता का मूल भाव लिखिए। 2

(vi) सागर और हिमालय की किस रूप में कल्पना की गई है ? 1

(vii) कविता में गांधी जी के किन सिद्धान्तों का उल्लेख हुआ है ? 1

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

इस संसार के कर्मक्षेत्र कहा गया है। सारी सृष्टि कर्मरत है। छोटे से छोटा प्राणी भी कर्म का शाश्वत सन्देश दे रहा है। प्रकृति के साम्राज्य में कहीं भी अकर्मण्यता के दर्शन नहीं हो रहे हैं। सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, ग्रह-नक्षत्रादि निरंतर गतिशील हैं। नियमानुकूल सूर्योदय होता है और सूर्यास्त तक किरणें प्रकाश बिखेरती रहती हैं। रात्रिकालीन आकाश में तारावलि तथा नक्षत्रावलि का सौंदर्य विहँस उठता है। क्रमशः बढ़ती-घटती चन्द्रकला के दर्शन होते हैं। इसी तरह विभिन्न ऋतुओं का चक्र अपनी धुरी पर चलता रहता है। नदियाँ अविरल गति से बहती रहती हैं। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सबके जीवन में सक्रियता है। वस्तुतः कर्म से परे जीवन का कोई उद्देश्य नहीं है।

मनुष्य का जन्म पाकर हाथ-पैर तो हिलाने ही होंगे। हमारे प्राचीन ऋषियों ने शतायु होने की किन्तु कर्म करते हुए जीने की इच्छा प्रकट की थी। इतिहास साक्षी है कि कितने ही भारतीय युवकों ने कर्मशक्ति के बल पर चन्द्रगुप्त की भाँति शक्तिशाली साम्राज्यों की स्थापना की। आधुनिक युग में भारत जैसे विशाल जनतंत्र की स्थापना करने वाले गाँधी, नेहरू, पटेल आदि कर्मपद पर दृढ़ता के ही प्रतिरूप थे। दूसरी ओर इतिहास उन सम्राटों को भी रेखांकित करता है जिनकी अकर्मण्यता के कारण महान् साम्राज्य नष्ट हो गए। वेद, उपनिषद्, कुरान, बाईबिल आदि सारे धर्मग्रंथ कर्मठ मनीषियों की ही उपलब्धियाँ हैं। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की गौरव-गरिमा वैज्ञानिकों की देन है जिन्होंने साधना की बलि-वेदी पर अपनी हर साँस समर्पित कर दी। विज्ञान कर्म का साक्षात् प्रतीक है। सुख-समृद्धि के शिखर पर आसीन प्रत्येक व्यक्ति अथवा जाति कर्म-शक्ति का परिचय देती है।

(i) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

(ii) कम का संदेश निरंतर हमें किनसे मिल रहा है ? 1

(iii) प्रकृति की कौन-सी अन्य वस्तुएँ हैं जिनसे सक्रियता का सन्देश मिलता है ? 1

(iv) ऋषियों ने सौ वर्ष का कैसा जीवन चाहा था ? 1

(v) कर्म के बल पर किन साम्राज्यों की स्थापना हुई ? 1

(vi) भारत जैसे विशाल जनतंत्र की स्थापना किस बल पर की गई ? 1

(vii) अकर्मण्यता के क्या परिणाम होते हैं ? 1

(viii) धर्मग्रंथों को कर्मठ व्यक्तियों की उपलब्धि क्यों कहा है ? 1

(ix) विज्ञान कर्म का प्रतीक कैसे है? 1

(x) सक्रियता और विशाल का विपरीतार्थक लिखिए। 1

(xi) चन्द और पृथ्वी के दो-दो पर्यायवाची लिखिए। 2

खण्ड 'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए— 5

(क) **पुस्तक मेले में अधूरी खरीदारी**

- समेले में
- रुचि की पुस्तकें
- मूल्य अधिक, बजट कम

(ख) **शिक्षक-दिवस पर मेरी भूमिका**

- भूमिका क्या थी
- कैसे निभाई
- प्रभाव और परिणाम

(ग) **दुर्लभ होता है अच्छा मित्र**

- अच्छा मित्र कौन
- क्यों होता है दुर्लभ
- कैसे करें चुनाव

4. आपसे अपने बचत खाते की चेक बुक खो गई है। इस सम्बन्ध में तत्काल उचित कार्रवाई करने के लिए निवेदन करते हुए बैंक-प्रबन्धक को पत्र लिखिए।

अथवा

पढ़ाई का सत्र प्रारंभ हो चुका है किन्तु बाजार में पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। इस समस्या को उठाते हुए किसी दैनिक पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

खण्ड 'ग'

5. (क) शब्द किसे कहते हैं ? वह पद कैसे बन जाता है ? 1

(ख) नीचे दिए गए वाक्य में रेखांकित पदबंध का नाम बताइए— 1

<u>गंगा-यमुना वाला देश</u> भारत ही है।

(ग) रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए— 2

<u>संसार</u> में सदा सुखी कौन रहता है ?

6. (क) निर्देशानुसार वाक्य बनाइए— 2

(i) वह मुझसे मिलकर चला गया। (संयुक्त वाक्य)

(ii) स्टेशन पहुँचते ही उसने टेलीफोन कर दिया। (मिश्र वाक्य)

(ख) रचना के अनुसार वाक्य-भेद बताइए—

(i) कहानी पूरी हो गई और मैं सोता ही रहा।

(ii) मैं जानता हूँ कि तुम मना नहीं करोगे।

7. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए—

(क) महाशय, नरेन्द्र। (संधि विच्छेद कीजिए) 1

(ख) कार्य + आलय, प्रति + उत्तर। (संधि विच्छेद) 1

(ग) भरपेट, मान-अपमान। (समस्त पदों का विग्रह कीजिए) 1

(घ) पीतांबर पहनकर शिवालय चलोगे ? (रेखांकित पदों के समास का नाम लिखिए) 1

8. (क) दिए गए मुहावरों में से किन्हीं **दो** का प्रयोग वाक्य में इस प्रकार करें कि अर्थ स्पष्ट हो जाए— 2

(i) हवा से बातें करना

(ii) उँगली उठाना

(iii) निन्यानवे का फेर

(iv) हाथ का मैल

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त मुहावरों और लोकोक्ति द्वारा कीजिए— 2

(i) आलसी के .... सवार हुए बिना काम नहीं होगा।

(ii) उस गाँव में पढ़े-लिखे लोग तो हैं नहीं, इसलिए राजीव से ही सब सलाह-मशवरा करते हैं, वह .... राजा है।

9. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए— 4

(क) आज पूरे शहर में आतंक फैली है।

(ख) नाव से डूबते समय केवट पानी में कूद पड़ा।

(ग) मेरे को आज विद्यालय नहीं जाना है।

(घ) एक गर्म कप चाय ले जाओ।

खण्ड 'घ'

10. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी **एक** को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

उनका दृढ़ गन्तव्य था कि दर्शकों की रुचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का यह कर्त्तव्य भी है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे और उनका यकीन गलत नहीं था। यही नहीं, वे बहुत अच्छे गीत भी, जो उन्होंने लिखे, बेहद लोकप्रिय हुए। शैलेन्द्र ने झूठे अभिजात्य को कभी नहीं अपनाया। उनके गीत भाव-प्रवण थे—दुरूह नहीं। 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंगलिस्तानी, सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी'—यह गीत शैलेन्द्र ही लिख सकते थे। शांत नदी का प्रवाह और समुद्र की गहराई लिए हुए। यही विशेषता उनकी जिंदगी की थी और यही उन्होंने अपनी फ़िल्म के द्वारा भी साबित किया था।

(क) फ़िल्मकार प्राय: अपनी फ़िल्मों में उथली चीज़ें क्यों देते हैं ? 1

(ख) कलाकार उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार कैसे कर सकता है ? 2

(ग) क्यों कहा गया है—'यह गीत शैलेंद्र ही लिख सकते थे ?' 2

(घ) अपनी फ़िल्मों के द्वारा शैलेंद्र ने क्या सिद्ध करने का प्रयास किया ? 1

अथवा

दुनिया कैसे वजूद में आई ? पहले क्या थी ? किस बिंदु से इसकी यात्रा शुरू हुई ? इन प्रश्नों के उत्तर विज्ञान अपनी तरह से देता है, धार्मिक ग्रंथ अपनी-अपनी तरह से। संसार की रचना भले ही कैसे हुई हो लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव-जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था, अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चुका है। पहले बड़े-बड़े दालानों-आँगनों में सब मिलजुलकर रहते थे, अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में जीवन सिमटने लगा है। बढ़ती हुई आबादियों ने समंदर को पीछे सरकाना शुरू कर दिया है, पेड़ों को रास्तों से हटाना शुरू कर दिया है, फैलते हुए प्रदूषण ने पंछियों को बस्तियों से भगाना शुरू कर दिया है। बारूदों की विनाशलीलाओं ने वातारण को सताना शुरू कर दिया है। अब गरमी में ज़्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, ज़लज़ले, सैलाब, तूफ़ान और नित नए रोग, मानव और प्रकृति के इसी असंतुलन के परिणाम हैं।

(क) 'दुनिया कैसे वजूद में आई ?' इस प्रश्न का उत्तर वैज्ञानिक और धर्मग्रंथ कैसे देते हैं ? 2

(ख) 'धरती किसी एक की नहीं है'—कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

(ग) बढ़ती हुई आबादी के क्या परिणाम दिखाई पड़ रहे हैं ? 2

11. निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी **एक** को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

केवल इतना रखना अनुनय-
वहन कर सकूँ इसको निर्भय!
नतशिर होकर सुख के दिन में
तब मुख पहचानूँ छिन-छिन में।
दु:ख-रात्रि में करे वंचना मेरी जिस दिन निखिल मही

उस दिन ऐसा हो करुणामय,
तुम पर करूँ नहीं कुछ संशय।।

(क) कवि और कविता का नाम लिखिए। 1

(ख) कवि के अनुसार दु:खों में सारे लोग उससे कैसा व्यवहार करेंगे ? 1

(ग) 'तब मुख पहचानूँ छिन-छिन' से कवि का क्या तात्पर्य है ? 2

(घ) कवि करुणामय पर संशय क्यों नहीं करना चाहता है ? 2

अथवा

युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर।
सौरभ फैला विपुल धूप बन
मृदुल मोम-सा घुल रे मृदु तन !
दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित
तेरे जीवन का अणु गल-गल !
पुलक-पुलक मेरे दीपक जल!

(क) कवि और कविता का नाम लिखिए। 1

(ख) दीपक प्रकाश का असीम सागर कैसे दे सकता है ? 1

(ग) प्रियतम के लिए क्या-क्या करने का आग्रह दीपक से किया गया है ? 2

(घ) भाव स्पष्ट कीजिए—मृदुल मोम-सा घुल रे मृदु तन ! 2

12. निम्नलिखित में किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए— $3 \times 3 = 9$

(क) मीराबाई ने श्रीकृष्ण से अपनी पीड़ा हरने की प्रार्थना किस प्रकार की है ?

(ख) 'मनुष्यता' कविता में कवि ने उदार व्यक्ति की क्या पहचान बताई है ?

(ग) 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में झरने पर्वत का गौरव-गान कैसे करते हैं ?

(घ) 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया' इस पंक्ति में हिमालय किसका प्रतीक है और इससे कवि क्या कहना चाहता है ?

13. (क) बिहारी के दोहों के आधार पर ग्रीष्म ऋतु की प्रचंड गर्मी और दुपहरी का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। 3

(ख) 'तोप' कविता के आधार पर लिखिए कि विरासत में मिली चीज़ों का महत्व क्यों होता है ? 2

14. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए— $3 \times 3 = 9$

(क) येल्दीरीन ने ख्यूक्रिन को दोषी ठहराते हुए क्या कहा ?

(ख) समुद्र के गुस्से की क्या वजह थी ? उसने अपना गुस्सा कैसे निकाला ?

(ग) 'पतझर में टूटी पंक्तियाँ' पाठ में लेखक ने जापानियों के दिमाग़ में स्पीड का इंजन लगाने की बात क्यों कही ?

(घ) 'वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही था', कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

15. (क) जुलूस के लाल बाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई ? 'डायरी का एक पन्ना' पाठ के आधार पर लिखिए। 3

(ख) जीवन कैसे घरों में सिमटने लगा है ? 'अब कहाँ दूसरे के दुख में दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए। 2

16. निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर पूरक पाठ्य-पुस्तक 'संचयन' के आधार पर लिखिए— 4

(क) ठाकुरबारी की स्थापना के बारे में गाँव में क्या कहानी प्रचलित थी ?

(ख) तोतों के प्रति प्रीतम चंद के मधुर व्यवहार से उनके चरित्र की कौन-सी बातें मालूम होती हैं ?

17. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए— $2 \times 3 = 6$

(क) गाँव में ठाकुरबारी से ही पर्व-त्यौहार की शुरूआत क्यों होती थी ?

(ख) रामदुलारी की मार से इफ़्फ़न पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(ग) स्कूल की पिटाई का डर भुलाने के लिए लेखक क्या सोचा करता था ? 'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए।

(घ) इफ़्फ़न को अपनी दादी से बड़ा प्यार क्यों था ?

OUTSIDE DELHI SET-II — Code No. 4/1/2

खण्ड 'ग'

5. (क) शब्द और पद में क्या अंतर है ? उदाहरण-सहित लिखिए। 1

(ख) रेखांकित पदों का पद परिचय दीजिए— 2

मेरे गाँव में कई विद्वान् रहते हैं।

(ग) नीचे दिए गए वाक्य में रेखांकित पदबंध का नाम बताइए— 1

वह बहुत जोर से बोलता है।

6. (क) रचना के अनुसार वाक्य-भेद बताइए— 2

(i) तुम वहाँ जा सकते हो जहाँ वह रहता है।

(ii) उसने अपना काम कर लिया और घर चला गया।

(ख) निर्देशानुसार रूपांतरण कीजिए— 2

(i) वे यहाँ से जाकर भाषण देने लगे। (संयुक्त वाक्य में)

(ii) विदेश में रहने वाला मेरा भाई अब यहाँ नहीं आएगा। (मिश्र वाक्य में)

7. **निर्देशानुसार उत्तर लिखिए—**

(क) सहोदर, तथैव। (संधि विच्छेद कीजिए) 1

(ख) महा + आनन्द, सूर्य + उदय। (संधि कीजिए) 1

(ग) प्रतिवर्ष, धनहीन। (समस्त पदों का विग्रह कीजिए) 1

(घ) उसके भाई-बहन छमाही में पास हो गए। (रेखांकित पदों के समास का नाम लिखिए) 1

8. (क) दिए गए मुहावरों तथा लोकोक्तियों में से एक मुहावरा और एक लोकोक्ति का प्रयोग वाक्य में इस प्रकार कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए— 2

(i) तूती बोलना

(ii) मान न मान मैं तेरा मेहमान

(iii) चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात

(iv) आग में घी डालना

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त मुहावरों और लोकोक्ति द्वारा कीजिए— 2

(i) आजकल ऐसे आश्चर्यजनक समाचार सुनने को मिलते हैं कि दाँतों .... रह जाना पड़ता है।

(ii) भाई की दुर्घटना का समाचार सुनकर उसके चेहरे पर ...... लगीं।

9. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए— 4

(क) हमारा लक्ष्य ज्ञान प्राप्ति होनी चाहिए।

(ख) कमरे में पिताजी और माताजी बैठी हैं।

(ग) उस बगीचे में सुगंधित फूल हैं।

(घ) ऐसे सज्जन व्यक्ति कहाँ मिलेंगे।

16. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए— $2 \times 3 = 6$

(क) ठाकुरबारी का लोगों के प्रति क्या दायित्व था ?

(ख) हरिहर काका ने खाने की थाली बीच आँगन में क्यों फेंक दी ?

(ग) क्लास में बैठने पर टोपी शुक्ला को अजीब क्यों लगता था ?

(घ) मास्टर प्रीतमचंद के व्यक्तित्व और पहनावे को भयभीत करने वाला क्यों कहा है ? 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए।

17. निम्नलिखित में से किसी **एक** का उत्तर पूरक पाठ्य-पुस्तक 'संचयन' के आधार पर लिखिए— 4

(क) हेडमास्टर साहब का विद्यार्थियों के साथ कैसा व्यवहार था ? विस्तार से समझाइए।

(ख) समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है ? 'हरिहर काका' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

OUTSIDE DELHI SET-III — Code No. 4/1/3

खण्ड 'ग'

5. (क) पद और पदबंध में क्या अंतर है ? उदाहरण देकर समझाइए। 1

(ख) नीचे दिए गए वाक्य में रेखांकित पदबंध का नाम बताइए— 1

पौने दो घंटे बाद पुलिस आई।

(ग) रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए— 2

उस मकान में एक साँप रहता है।

6. (क) रचना के अनुसार वाक्य-भेद बताइए— 2

(i) जहाँ न जाय रवि, वहाँ जाय कवि।

(ii) चोर घर में घुसा और चोरी करके चला गया।

(ख) निर्देशानुसार रूपांतरण कीजिए— 2

(i) दिन-रात मेहनत करके उसने इतना धन कमाया। (संयुक्त वाक्य में)

(ii) मित्र के दु:ख में दु:खी होने वाले सच्चे मित्र कहलाते हैं। (मिश्र वाक्य में)

7. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए—

(क) गणेश + उत्सव, धन + आगम। (संधि कीजिए) 1

(ख) महानुभाव, चन्द्रोदय। (संधिविच्छेद कीजिए) 1

(ग) यथाशक्ति, ग्रामपंचायत। (समस्त पदों का विग्रह कीजिए) 1

(घ) महासागर में अनेक जीवजन्तु रहते हैं। (रेखांकित पदों के समास का नाम लिखिए) 1

8. (क) दिए हुए मुहावरों और लोकोक्तियों में से एक मुहावरा और एक लोकोक्ति का प्रयोग वाक्य में इस प्रकार कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए— 2

(i) रंग में भंग होना

(ii) पीठ दिखाना

(iii) सौ सुनार की एक लोहार की

(iv) गुदड़ी के लाल

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त मुहावरा और लोकोक्ति द्वारा कीजिए— 2

(i) शलभ को आता-जाता कुछ नहीं, बहस करता रहता है, इसे ही कहते हैं .... घना।

(ii) बेटे की शैतानियों ने पिता की .... कर दिया।

9. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए— 4

(क) उस दुकान में ताज़ा गाय का दूध मिलता है।

(ख) नेताजी के गले में एक गुलाब की माला पहनाई गई।

(ग) वो लोग दिल्ली में नहीं रहते हैं।

(घ) दुर्जन व्यक्ति का साथ छोड़ दें।

16. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए— $2 \times 3 = 6$

(क) हरिहर काका के ठाकुरबारी में चले जाने पर उनके भाइयों ने क्या किया ?

(ख) अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ कैसे रखते थे ?

(ग) मुन्नी बाबू ने टोपी शुक्ला को रिश्वत में क्या दिया और क्यों ?

(घ) सभी लड़के मास्टर प्रीतमचंद से क्यों डरते थे ? 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए।

17. निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर पूरक पाठ्य-पुस्तक 'संचयन' के आधार पर लिखिए— 4

(क) विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए 'सपनों के-से दिन' पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

(ख) टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मज़हब के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे। इस कथन के आलोक में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर

DELHI SET-I **Code No. 3/1/1**

खण्ड 'क'

1. गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर—

(i) लेखक के अनुसार आधुनिक संगम वे स्थान हैं, वे सभाएँ तथा वे मंच हैं, जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्र होती हैं क्योंकि वहाँ वास्तव में विभिन्न जनपदों के हृदय, भावों और विचारों का मिलन होता है।

(ii) भाषा संगमों में नाना जनपदों में बसने वाली जनता ने आँसू और उमंगें, भाव और विचार, आशाएँ एवं शंकाएँ समाहित होती हैं।

(iii) लेखक ने सबसे बड़ा सिपाही और संत उसे कहा है जो भाषाओं के संगम तीर्थ में श्रद्धा से स्नान करता है।

(iv) हमारी भाषाएँ जितनी ही तेजी से जगेंगी, हमारे अलग-अलग प्रदेशों में आपसी ज्ञान उतना ही बढ़ता चला जाएगा।

(v) स्वराज्य-प्राप्ति के उपरान्त विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों में यह जिज्ञासा पैदा हुई कि उनके नाम विभिन्न भाषाओं में पहुँचें एवं उनकी रचनाओं की चर्चा हो तथा अन्य भाषाओं में अनुवाद हो।

(vi) भाषा के जागरण से लेखक का अभिप्राय है कि एक मंच पर सभी भाषा-भाषी एकत्र हों और उनमें यह जानने की इच्छा उत्पन्न हो कि अन्य भाषाओं में क्या हो रहा है।

(vii) **शीर्षक**—भारतीय भाषाओं की एकता।

(viii) **समानार्थी**—

सौरभ	पराक्रम
आकांक्षा	जिज्ञासा

(ix)

शब्द	**प्रत्यय**
उल्लेखन	ईय
परस्पर	इक

(x) **विपरीतार्थी**—

भिन्नता	एकता
प्रत्यक्ष	अप्रत्यक्ष

2. काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर—

(i) 'धरती' शब्द से कवि का अभिप्राय हमारी मातृभूमि से है। वीरों ने मातृभूमि की रक्षा के लिए कुर्बानियाँ दीं, हँसते हुए शूली पर चढ़कर मृत्यु को प्राप्त किया और खून पसीना बहाकर सीने पर दुश्मन की गोलियाँ खाईं।

(ii) धरती के दुश्मन विदेशी आक्रमणवादी एवं आतंकवादी हैं। वे धरती को जाति-पाँति, वर्गों में, धर्मों में बाँटकर उसके टुकड़े करना चाहते हैं और प्रेम और एकता में दुश्मनी का जहर घोलना चाहते हैं।

(iii) अपने ही जयचन्दों से लेखक का अभिप्राय ऐसे लोगों से है जो विदेशी आक्रमणकारियों एवं आतंकवादियों को देश का भेद देते हैं तथा देश का अहित कराने के लिए उनको पनाह देते हैं। उनके मन में छल-कपट की भावना रूपी चोर बैठा हुआ है।

(iv) 'सावधान कर दो उसको जो पहने कपटी खाल हैं' से तात्पर्य ऐसे लोगों को सावधान करने से है जो ऊपर से सीधे-साधे, अच्छे पढ़े-लिखे और सभ्य लगते हैं परन्तु जिनके भीतर छल, कपट, विध्वंशरूपी जहर भरा है। उन्हें देश की एकता एवं अखण्डता के प्रति सचेत करना आवश्यक है।

अथवा

(i) भारत के ऋषि-मुनियों ने अपने तप से भारत की मिट्टी को पवित्र किया है, दूसरों के हित के लिए मोम की तरह पिघल कर कल्याण प्रक्रिया और संयमित जीवन जीकर भारत की मिट्टी को स्वर्णिम बनाया है।

(ii) 'कठिन आत्म मंथन के हित, जो असि धारा पर चलते हैं' का अर्थ है ऋषि-मुनि तपस्या करते-करते संसार के हित के लिए दिल में गहन अध्ययन करते हैं। भूखे, प्यासे रहकर त्याग करते हैं जो तलवार की धार पर चलना है, गर्मी, सर्दी, बरसात को समानता के साथ सहते हैं।

(iii) ऋषि मुनि दूसरों को ज्ञान और आध्यात्म का प्रकाश देने के लिए मोम के दीपक के समान जलते हैं अर्थात् खोज-खोज कर ज्ञान का प्रचार-प्रसार करके दूसरों का कल्याण करते हैं।

(iv) ऋषि-मुनियों का सत्य-अहिंसा आभूषण है, उनकी वाणी करुणामय है और लोगों को कल्याणकारी आशीर्वाद देते हैं। 'सर्वहिताय सर्व सुखाय' की कामना करते हैं अत: ऋषि-मुनि वंदनीय हैं।

खण्ड 'ख'

3. (क) **किसी मैच का आँखों देखा वर्णन**

हमारे जीवन में खेलों का विशेष महत्व है। मानव ने अपने तथा अपने विश्व के मनोरंजन व प्रमोद के लिए अनेकानेक खेल चलाए हैं। इन सभी खेलों का अपना-अपना स्थान है और अपने-अपने दर्शक भी हैं। मैं हॉकी, फुटबॉल, बैडमिंटन, कुश्ती, क्रिकेट, बेसबॉल जैसे खेल अधिक पसंद करता हूँ परंतु क्रिकेट की लोकप्रियता ने मुझे भी प्रभावित कर दिया है। मैं विदेश के उन लोगों में से एक हूँ जो अपना काम-काज निपटाकर क्रिकेट के मैच का आनंद उठाते हैं। यूँ तो किसी भी मैच को अब दूरदर्शन व अन्य केबल चैनलों पर खेलते खिलाड़ियों व उनके खेल को देखने का एक अलग ही रोमांच होता है। मुझे भी अपने नगर के बर्ल्टन पार्क में पाकिस्तान के साथ खेले गए एक मैच को देखने का अनुभव प्राप्त है जिसे मैं आज तक भूल नहीं पाया।

पाकिस्तान के साथ होने वाला कोई भी मैच अत्यंत रोमांचक होता है। दोनों देशों को परिणाम की चिंता रहती है और दोनों ही देशों में दर्शक व खेल-प्रेमी अपनी-अपनी टीम के विजेता होने की कामनाएँ व भविष्यवाणियाँ किया करते हैं।

मैं अपने भैया के सौजन्य से मैच के दो पास प्राप्त करने में सफल हो गया था और मैं अपने मित्र कदंब के साथ स्टेडियम में निर्धारित समय से लगभग दो घंटे पहले ही जा बैठा था। खिलाड़ियों को इतनी निकटता से देखने का मेरा यह प्रथम अवसर था। स्टेडियम को तथा उसके आस-पास की सड़कों, वृक्षों, भवनों को विशेष रूप से सँवारा-सजाया गया था। मैदान भी आज मुझे नया-नया सा प्रतीत हो रहा था। ठीक पौने नौ बजे मैच रैफरी दोनों टीमों के कप्तानों के साथ टॉस के लिए मैदान के बीचों-बीच आ पहुँचा। टॉस पाकिस्तान ने जीता और उसने पहले बल्लेबाजी का निर्णय लिया। नौ बजते ही दोनों अंपायर मैदान में दिखाई दिए और उनके पीछे पाकिस्तान के ओपनर बल्लेबाज़ और साथ ही भारतीय टीम दिखाई दी। नौ पाँच पर अंपायर ने जैसे ही 'प्ले' कहा, वैसे ही मैच प्रारंभ हो गया। दोनों ओर ऊँचे-ऊँचे स्कोरबोर्ड लगे थे। दर्शकों में विशेष उत्साह था। उनके हाथों में झंडे, पोस्टर, कार्टून और चौके-छक्के के सूचक गत्ते थे। कइयों के पास खाली ड्राइंग पेपर थे और वे उन पर तत्काल कुछ-न-कुछ लिखकर कैमरे की ओर कर रहे थे।

दूसरे ही ओवर में पहला विकेट गिरा। तब केवल दो रन बने थे। भारतीय प्रशंसक झूम उठे। परंतु हमारी प्रसन्नता देर तक बनी नहीं रह सकी। आने वाले खिलाड़ी ने ऐसा रंग जमाया कि 33 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा कर डाला। धीरे-धीरे रनों की गति तेज़ होती गई। पंद्रहवें ओवर में एक दूसरा ही दृश्य सामने आया। इस ओवर में लगातार दो विकेट गिर गए। रन बनने थोड़े कठिन हो रहे थे परंतु एजाज़ तथा यूसुफ़ ने सँभलकर खेलते हुए 100 रन की साझेदारी पूरी कर ली और अपनी टीम के स्कोर को पचास ओवर में 236 के सम्मानजनक स्कोर तक पहुँचा डाला।

भारत के लिए 237 रनों की चुनौती कोई बहुत बड़ी चुनौती नहीं थी, परंतु हमारा दिल बैठता जा रहा था। मध्यांतर में खाते-पीते हुए भी हम दोनों मित्र सोच रहे थे कि हमारी टीम तो बहुत ही अनिश्चित है। यदि तेंदुलकर जल्दी आउट हो जा जाए, तो बाकी खिलाड़ी भी जल्दी-जल्दी आउट होने लगते हैं। द्रविड़ चोटिल था और वह इस मैच में नहीं खेल रहा था और द्रविड़ जैसा भरोसेमंद कोई और दिखाई नहीं दे रहा था।

भोजन का अवकाश बीता तो हमारे सचिन और गांगुली मैदान पर आए। वही हुआ जिसका हमें डर था। अभी 24 रन ही बने थे कि सचिन को विकेटकीपर ने लपक लिया। अगले ही ओवर में गांगुली को कमर के ऊपर और शरीर पर प्रहार करते हुए गेंद फेंके जाने लगे। वह कुछ गेंद तो सँभलकर खेल गया, परंतु ओवर की अंतिम गेंद पर एक ऊँचा शॉट खेलने के चक्कर में स्लिप में लपक लिया गया। युवराज तथा दिनेश भी जल्दी-जल्दी रन बनाना चाहते थे। इसी रणनीति में दिनेश मोंगिया 17 के निजी स्कोर पर बोल्ड हो गया। उस समय भारत का स्कोर केवल 63 पर था। युवराज के साथ मुहम्मद कैफ ने सँभलकर खेलते हुए अच्छे शॉट लगाए। इन दोनों ने 40वें ओवर में टीम के स्कोर को 180 तक पहुँचा दिया। तभी युवराज का विकेट गिर गया। अब पीछे कोई जमकर खेलने वाला दिखाई न दे रहा था। मुझे निश्चित हार दिखाई देने लगी।

कैफ के साथ इरफ़ान पठान ने कई आकर्षक चौके लगाए और स्कोर को 219 तक पहुँचा दिया। अब हमें जीत के लिए 18 रन चाहिए थे और केवल दो ओवर शेष थे। हम प्रत्येक गेंद पर खड़े हो जाते, परंतु हमारा दिल बैठ जाता। तीन गेंद व्यर्थ चले गए। अब नौ गेंद में 18 रन बनाने थे। तभी पठान ने दो लगातार चौके व एक सिंगल लेकर आशा बँधा दी। अब एक ओवर में नौ रन चाहिए थे। हम घबरा रहे थे, परंतु पठान के सिंगल और कैफ के दो चौकों ने हमारी तथा हमारे देश की लाज बचा ली। हम खुशी से उछल पड़े। कैफ को मैच का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। उसने नाबाद 93 रन बनाए थे। यह मैच मुझे अब तक स्मरण है।

(ख) **परिवहन की कठिनाइयाँ एवं महँगाई**

दैनिक जीवन में हम अनेक लोगों से मिलते हैं जो विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं—सड़क पर ठेला लगाने वाला, दूध वाला, नगर निगम के कर्मी, बस कण्डक्टर, स्कूल अध्यापक, ऐसे ही कई अन्य लोग। शिक्षा वेतन, परंपरागत चलन और व्यवसाय के स्तर पर कुछ लोग निम्न स्तर पर कार्य करते हैं तो कुछ उच्च स्तर पर। शिक्षा के क्षेत्र में एक हिन्दी अध्यापक की आय सीमित होती है क्योंकि वह आजकल के वातावरण में सादगी से ही जीवनयापन करता है क्योंकि उसके पास अन्य विषयों की तरह ट्यूशन नहीं होते।

हमारे पड़ोस में ही हिन्दी के श्री कामताप्रसाद गुरुजी रहते हैं, वे एक हिन्दी के बेजोड़ अध्यापक हैं। जब वे कविता पढ़ाते हैं तो रस गंगा बहा देते हैं और छात्र-छात्राओं को भाव विभोर कर देते हैं। व्याकरण पढ़ाने में तो उनका मुकाबला नहीं है। छोटी से छोटी परिभाषा सरल एवं सहज भाषा में लिखकर उदाहरणों से ही ऐसे समझा देते हैं कि कभी भूल नहीं पाते।

श्रीकामताप्रसाद गुरु जी साइकिल से स्कूल आते-जाते थे कभी-कभी बस से जाते थे बहुत परेशान हो जाते थे। इस प्रकार परिवहन की दिन-प्रतिदिन की कठिनाइयों से छुटकारा पाने के लिए उन्होंने एक पुराना सा बजाज सुपर स्कूटर खरीद लिया। कुछ दिन तो सब ठीकठाक रहा। वे स्कूटर से बड़ी खुशी से स्कूल जाते थे तो हमें भी अच्छे लगते थे। कभी-कभी हम भी उनके साथ हो लेते थे। उनका स्वभाव इतना अच्छा था कि कभी उन्होंने बिठाने से मना नहीं किया और यह कहते थे कि अकेले में भी पैट्रोल तो बराबर ही लगेगा तो दो क्यों नहीं चलें। बातचीत करते 15 किमी का सफर बहुत जल्दी पूरा हो जाता था।

लेकिन कुछ दिन बाद सरकार ने पैट्रोल, डीजल की कीमतों में इजाफा किया 30% भाव बढ़ा दिया फिर चार महीने बाद 20% बढ़ा दिया। अब पहले की अपेक्षा पैट्रोल का दाम दुगना हो गया। स्कूटर तो पैट्रोल बहुत पीता है एवं पुराना वाहन औसतन कम एवरेज देता है। गुरुजी रोज 50 रु. का पैट्रोल भरवाते तो दूसरे दिन रास्ते में खड़ा हो जाता था। इसलिए वह रोज सुबह ही पैट्रोल भरवाने पहुँच जाते थे। धीरे-धीरे उनका घरेलू बजट बोल गया। वे परेशान होने लग गये कभी-कभी स्कूटर खराब होने पर भी खर्च होता था। गुरुजी के लिए स्कूटर का रख-रखाव कठिन हो गया। वे उसे बेचने की सोचते कभी रखने की। बड़े असमंजस में पड़ गये। हमारे देश की एक बड़ी धनराशि पैट्रोल पर व्यय होती है। इसके लिए भारत कुछ नहीं कर पाया। अत: रोज-रोज पैट्रोल का भाव बढ़ता जा रहा है। परिणामस्वरूप हर चीज महँगी होती जा रही है। बड़े-बड़े व्यापारी और पूँजीपति धन-बल पर आवश्यक वस्तुओं का भण्डारण कर लेते हैं। इससे बाजार में अचानक वस्तुओं की आपूर्ति कम हो जाती है।

महँगाई बढ़ने का सबसे बड़ा दुष्परिणाम गरीबों और निम्न मध्यम वर्ग को होता है। इससे उनका आर्थिक संतुलन बिगड़ जाता है। या तो उन्हें पेट काटना पड़ता है, या बच्चों की पढ़ाई-लिखाई जैसी आवश्यक सुविधा छीन लेनी पड़ती है।

अब गुरुजी दैनिक उपभोग की वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होने के कारण घरेलू बजट में भी कमी करने लगे। स्कूटर घर पर खड़ा है पर वे स्कूल साइकिल से जाते हैं। पर वे करें भी क्या क्योंकि बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, खान-पान, किताबों का खर्च बढ़ जाने से एक गरीब आदमी के लिए वाहन चलाना जरूरी नहीं है। घर गृहस्थ की आवश्यकताओं की पूर्ति आवश्यक है। आज एक साधारण व्यक्ति का महँगाई के कारण जीवन अस्त-व्यस्त है तथा समाज की रीति-रिवाजों का निर्वाह करना भी कठिन है।

(ग) **टेलीविज़न के लाभ-हानि**

संकेत बिन्दु—1. टेलीविजन : विज्ञान का चमत्कार, 2. युवा वर्ग की वर्तमान दशा, 3. युवाओं पर टेलीविजन का प्रभाव, 4. संभावनाएँ।

टेलीविजन या दूरदर्शन विज्ञान का अद्‌भुत चमत्कार है। यह बहुत ही उपयोगी और प्रभावशाली यंत्र है जो मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक शिक्षा का सामान्य साधन बन गया है। आविष्कार के बाद कुछ ही वर्षों में इसकी लोकप्रियता बेहद बढ़ी है और निरंतर तकनीकी विकास से यह सजीव चित्रों का प्रदर्शन मानो जीवन की नकल बन गया है। वैसे तो इसका सभी वर्गों पर प्रभाव पड़ा है, पर युवा वर्ग में इस प्रभाव की व्यापकता व संभावना अपरिमित है। शिक्षा, मनोरंजन और ज्ञानवृद्धि के अतिरिक्त यह उनका मार्गदर्शक भी बन सकता है, बशर्ते कि इसकी शक्ति का सही उपयोग किया जाए।

भारत में दूरदर्शन पर शुरू-शुरू में फिल्में और फिल्मी गीतों के सचित्र प्रदर्शन को ही महत्ता दी जाती थी, परंतु अब धीरे-धीरे कार्यक्रमों को व्यापक, विविध और ज्ञानवर्द्धक बनाया जा रहा है। 'मास-मीडिया' या जन-शिक्षा साधन के रूप में इसका प्रयोग बढ़ाया जा रहा है। उपग्रह की सेवाएँ उपलब्ध हो जाने से दूरदर्शन का उपयोग राष्ट्रीय पैमाने पर किया जा रहा है। लगभग पचास हजार गाँवों को दूरदर्शन से खेती, ज्ञान-विज्ञान, समाज शिक्षा और परिवार नियोजन जैसे उपयोगी कार्यक्रमों के साथ उच्च-स्तरीय मनोरंजन के साधन उपलब्ध कराए गए हैं। दूरदर्शन के अनेक नए स्टेशन प्रारंभ किए गए हैं। भारत के पार पाकिस्तान तक में भी अमृतसर व श्रीनगर के दूरदर्शनों को चाव से देखा जा सकता है।

विज्ञान ने सिद्ध किया है कि ध्वनि के साथ-साथ दृश्य का सहयोग हो जाने से ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा देना सुगम हो जाता है। 'ऑडियो-विजुअल-एड्स' (Audio-visual-Aids) या श्रव्य-दृश्य साधनों का अब शिक्षा में काफी अधिक प्रयोग भी इसी हेतु किया जाने लगा है। मनोरंजन की दृष्टि से भी दूरदर्शन चित्र और ध्वनि का संगम ही नहीं, मुँह बोलती जीवन की घटनाओं का दिग्दर्शन भी कराता है। शिक्षा हो या मनोरंजन, दूरदर्शन अन्य सभी माध्यमों से अधिक सफल और समर्थ है। रेडियो केवल ध्वनि माध्यम है, वह इससे बहुत हल्का है। सिनेमा की दूरदर्शन से अवश्य प्रतिस्पर्धा है, लेकिन अनेक दृष्टियों से दोनों का अपना-अपना अलग-अलग महत्व है।

युवकों का मस्तिष्क नई-नई बातों की ओर बहुत तेजी से दौड़ता है। उसमें शक्ति और आवेश भी अन्य अवस्थाओं के लोगों से बहुत ज्यादा होता है। इस अवस्था में अगर सही शिक्षा और मार्गदर्शन न मिले तो यही शक्ति व आवेश निर्माण की बजाय विनाश की ओर चल पड़ता है। बिगड़ने और बनने की यही कच्ची उम्र होती है। दुर्भाग्य से हमारे देश में शिक्षा-पद्धति केवल उपाधि बाँटने का काम ही करती है, एक संपूर्ण व्यक्तित्व वाला मनुष्य नहीं बनाती। किताब के सीमित पाठ्यक्रम, पुरानी व दूषित परीक्षा प्रणाली एवं शिक्षा का गिरता हुआ स्तर—ये सब मिलकर शिक्षा को आदर्श नहीं बना पाते। साथ ही विद्यार्थी वर्ग राजनीति का शिकार होकर मार्ग-भ्रष्ट, विध्वंसक व अनुशासनहीन हो चला है। शिक्षक उनके सामने कोई आदर्श या भय नहीं रह गए हैं। ऐसी हालत में व्यापक ह्रास व कुशिक्षा का एक राष्ट्रीय वातावरण तैयार हो गया है। निष्प्रयोजन शिक्षा ने युवकों को न तो व्यावसायिक योग्यता दी है, न विषय संबंधी ज्ञान। फलत: चारों ओर अव्यवस्था ही दिखाई देती है।

जिन युवकों को शिक्षा की सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं, वे भी लक्ष्यहीन हैं। देश में व्यापक भ्रष्टाचार के कारण स्वार्थ, आलस्य, तोड़-फोड़, विरोध और अराजकता फैलती जा रही है। इन बुराइयों को दूर करने के लिए दूरदर्शन का उचित व सशक्त उपयोग किया जा सकता है।

जीवन के अनेक पक्षों की सही शिक्षा, संसार के अन्य देशों की जानकारी, सामान्य ज्ञान और राष्ट्रीयता की भावना तो बढ़ी ही है, स्वस्थ मनोरंजन भी होने लगा है। कई प्रकार की तकनीकी शिक्षा दूरदर्शन से दी जाती है। गाँवों तक में पंचायतों के द्वारा यह सुविधा उपलब्ध है। लोगों की, विशेष रूप से युवकों की, राष्ट्रीय विकास के कार्यक्रमों में संपृक्ति बढ़ती जा रही है। उन्हें दिशा भी मिल गई है और लक्ष्य भी दिखाई पड़ता है। सरकारी सहायता व सहयोग भी बढ़ गया है। युवकों में दूरदर्शन बच्चों से भी अधिक लोकप्रिय है।

युवकों का इस प्रकार एक स्थान पर बैठ जाना भी हितकर है। व्यर्थ घूमने-फिरने व आवारागर्दी में समय नष्ट न करके वे स्थिर होकर कुछ सुन-सीख भी रहे हैं तथा भविष्य के लिए तैयार और जिम्मेदार भी बन रहे हैं। दूरदर्शन ने निश्चय ही युवकों की जीवन-गति बदल दी है। उन्हें नागरिक होने के नाते अपने अधिकारों की ही नहीं, कर्त्तव्यों की भी सही शिक्षा मिल रही है। नाटक, नृत्य, कला आदि के कार्यक्रमों से उनकी सांस्कृतिक अभिरुचि विकसित हो रही है और उचित मनोरंजन भी हो रहा है।

युवकों में प्रभाव ग्रहण करने की क्षमता ज्यादा होती है। विशेष रूप से वे कुसंस्कार व व्यसन जल्दी अपनाते हैं। अत: दूरदर्शन के कार्यक्रमों के प्रसारण में विशेष सावधानी की आवश्यकता है। भारत में यह माध्यम सरकार के हाथों में है और सौभाग्य से सरकार की नीति स्वस्थ व नैतिकतापूर्ण है। व्यावसायिक सिनेमा की चटक-मटक, यौन-प्रदर्शन, विशाल वृत्ति व मुक्त हिंसा का कोई तत्व दूरदर्शन के कार्यक्रमों में नहीं है। असल में इसकी व्यावसायिक सिनेमा से कोई प्रतियोगिता ही नहीं है। प्रतियोगिता होती तो वैसी ही लटके एवं फार्मूले इसमें भी आते। दूसरे, यह सिनेमा की तरह आर्थिक लाभ के लिए नहीं है। इसका उद्देश्य भी भिन्न है। समांतर सिनेमा की तरह यह या तो कलात्मकता पर बल देता है अथवा शिक्षा पर। दोनों ही सुरुचिपूर्ण हैं। यदि दूरदर्शन से भारतीय कार्यक्रमों की तुलना की जाए तो भी यही तथ्य सामने आएगा। विदेशों में कई ऐसे प्रदर्शन होते हैं जो अश्लील, हिंसापूर्ण और शुद्ध व्यावसायिक हैं। कोई कह सकता है कि भारतीय कार्यक्रमों में प्रचार व नीरसता ज्यादा होती है। लेकिन यह कुप्रभाव वाले व्यावसायिक प्रदर्शनों से भी तो बचा हुआ

है। यह सोद्देश्य है। हमारा देश अपने ढंग से विकास कर रहा है। प्रजातंत्र की अपनी सीमाएँ व लक्ष्य हैं, अत: प्रचार साधन भी तदनुकूल होना चाहिए।

दूरदर्शन की संभावनाएँ भी बहुत हैं। उदाहरणार्थ, नए राष्ट्रीय कार्यक्रमों का सही प्रचार व युवकों से उसे पूरा करने के लिए सहायता-सहयोग इस साधन से बहुत कारगर हो सकता है। ऐसे नाटक, फीचर व परिचर्चाएँ जो उक्त कार्यक्रम को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कर सकें, दूरदर्शन से पूर्णत: संभव है। इसी प्रकार से परिवार नियोजन की सही आवश्यकता युवावस्था से ही बनाई जानी चाहिए, यह काम दूरदर्शन से सुगम व प्रभावयुक्त हो सकता है। कुल मिलाकर दूरदर्शन एक बड़ा ही प्रभावशाली, लोकप्रिय व स्वस्थ साधन है। जो समाज के सभी वर्गों के लिए उपयोगी हो सकता है। यह शिक्षा, ज्ञान व जन-कल्याण के संदेशों को सचमुच ही घर-घर पहुँचाने वाला है।

4. **धूम्रपान करने वाले मित्र को पत्र**

कमलानगर,
नई दिल्ली।
8 फरवरी, 2009
प्रिय मित्र संदीप,

सप्रेम नमस्ते।

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ और आशा करता हूँ कि छात्रावास में तुम भी कुशलपूर्वक होंगे और अपनी वार्षिक परीक्षा की तैयारियों में एकाग्रचित्त लगे होंगे।

कल तुम्हारा एक पुराना सहपाठी मिला था और बातों ही बातों में धूम्रपान पर बात चली तो उसने बताया कि आजकल तुम भी धूम्रपान करने लगे हो। पहले तो मुझे उसकी बातों पर विश्वास ही नहीं हुआ कि तुम यह व्यसन भी करने लगे हो, परन्तु जब उसने बताया कि उसने अपनी आँखों से तुम्हें धूम्रपान करते हुए देखा है तो मेरा मन तुम्हारे प्रति चिन्तित हो उठा।

मित्र धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, जिसके सेवन से खाँसी, क्षय रोग, फेंफड़ों की खराबी तथा कैन्सर जैसा असाध्य रोग भी हो सकता है जब इसका धुआँ दिमाग में चढ़ता है तो छात्र के लिए असहनीय हो जाता है और फिर अधिक नसे की लत पड़ जाती है। इसलिए धूम्रपान त्यागकर अपने मन पर नियंत्रण रखो और जो मित्र इसके सेवन के लिए कहते हैं उनसे दूर रहो। धूम्रपान से शरीर शक्तिहीन होता है। इसलिए शक्तिवर्धक, पौष्टिक चीजों का प्रयोग करो। यदि यह बात तुम्हारे माता-पिता को पता चलेगी तो वे बहुत दु:खी होंगे तो क्या तुम्हें अच्छा लगेगा। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो। मेरी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं।

तुम्हारा मित्र
भरत

अथवा

समारोह की अध्यक्षा हेतु पत्र

सेवा में,
पुलिस अधीक्षक
आगरा महानगर,
आगरा।

विषय—समारोह की अध्यक्षता हेतु निवेदन।

महोदय,

मैं मुकेश कुमार रावत, सर्वहितकारी समिति, खंदौली का सचिव हूँ। यह समिति दिनांक 24/6/09 को कस्बे में स्थित सर्वहितकारी समिति के सभागार में एक वार्षिक उत्सव मनाने का आयोजन करने जा रही है जिसमें समिति अपने कार्यों एवं लेखा-जोखा को सर्वहित की भावना से प्रस्तुत करेगी। साथ ही साथ कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी प्रदर्शन किया जाएगा जो समाज के सुधार के लिए शिक्षाप्रद होंगे।

अत: आपसे अनरोध है कि आप अपना अमूल्य समय देकर इस सर्वहितकारी समिति के समारोह की अध्यक्षता करें और हमारी समिति का मनोबल बढ़ाएँ, अतिकृपा होगी।

भवदीय
मुकेश कुमार रावत
सचिव
सर्वहितकारी समिति
कस्बा खंदौली
आगरा।

खण्ड 'ग'

5.	(क)	(i)	जागता रहा	—	अर्कमक क्रिया।
		(ii)	लाया	—	सकर्मक क्रिया।
	(ख)	(i)	के बिना	—	सम्बन्ध बोधक अव्यय।
		(ii)	इसलिए	—	समुच्चय बोधक अव्यय।

6. पद परिचय—

मैंने—पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक, देखा क्रिया का कर्ता।

विमान—जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्मकारक, देखा क्रिया का कार्य।

7. निर्देशानुसार उत्तर—

(i) **संयुक्त वाक्य में**—मैं नई कार खरीदूँगा परन्तु पुरानी कार नहीं खरीदूँगा।

(ii) **मिश्र वाक्य में**—जो व्यक्ति साहसी है, उसके लिए कोई भी कार्य दुष्कर नहीं होता।

(iii) **सरल वाक्य में**—उसने पुस्तकालय जाकर महाभारत पढ़ी।

8. निर्देशानुसार उत्तर—

(i) **कर्मवाच्य में**—हमारे द्वारा यह अपार कष्ट सहन नहीं किया जा सकता।

(ii) **कर्तृवाच्य में**—यह छात्रा भावभीनी श्रद्धांजलि दे रही है।

(iii) **भाव वाच्य में**—आओ! चला जाए।

9. अलंकार की पहचान—

(i) बालकु बोधि बधहुँ नहिं तोहीं—अनुप्रास अलंकार।

(ii) नयन तेरे मीन से हैं—उपमा अलंकार।

(iii) पाट-पाट शोभाश्री पट नहीं रही है—अनुप्रास अलंकार है।

खण्ड 'घ'

10. काव्यालंकार आधारित प्रश्नों के उत्तर

(i) गोपियाँ कृष्ण के प्रति अपने प्रेम की एकाग्रता एवं दृढ़ता के भाव दर्शाना चाहती हैं। जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पंजों में एक लकड़ी को हमेशा पकड़े रहता है वैसे ही गोपियाँ भी कृष्ण को दृढ़तापूर्वक अपने मन में दिन-रात बसाए बैठी हैं। इसलिए गोपियों ने श्रीकृष्ण को हारिल की लकड़ी कहा है और कृष्ण को ही अपना एकमात्र सहारा मानती हैं।

(ii) गोपियों को उद्धव जी का योग संदेश कड़वी ककड़ी के समान लगता है। जिस प्रकार एक कड़वी ककड़ी खाई नहीं जा सकती तथा अरुचिकर लगती है उसी प्रकार उद्धव जी द्वारा दिया गया योग संदेश कड़वी ककड़ी के समान अरुचिकर लगता है। गोपियों के अनुसार योग संदेश की आवश्यकता उन्हीं व्यक्तियों के लिए होती है जिनका मन अस्थिर एवं निरंतर दुविधा में रहता है।

(iii) गोपियाँ उद्धव जी के ज्ञान और योग के संदेशों को व्याधि मानती हैं तथा गोपियाँ उस व्याधि को उनको (कृष्ण) को सौंपने का परामर्श देती हैं। जिनका मन चंचल एवं चलायमान रहता है। बुद्धि भ्रमित रहती है।

अथवा

(i) कवि में 'आत्मकथ्य' कविता में मधुप के रूप में अपने मन की कल्पना की है। कवि का मधुप रूपी मन अभावों एवं कष्टों से भरे जीवन की निराशा और सूनेपन को गुनगुना कर बता रहा है, जिस जीवन में कभी सुख था वह दु:ख से भरा हुआ है।

(ii) मुरझाकर गिरती हुई पत्तियाँ संकेत कर रही हैं कि जिस जीवन में कभी बसंत था वहाँ दु:ख रूपी पतझड़ आ जाने के कारण सुख तथा आनंद की पत्तियाँ मुरझा कर गिर रही हैं। अर्थात् सुखों का स्थान निराशा, चिन्ता और दु:ख लेने लगे हैं।

(iii) 'गंभीर अनंत नीलिमा' से अभिप्राय है कि यह संसार अंतहीन आकाश की भाँति दूर-दूर तक फैला हुआ है। इसमें रहने वालों के जीवन का अपना इतिहास है। उस जीवन में व्यक्तिगत जीवन के दु:खद पहलू भी आते हैं। लोग अपने जीवन से जुड़े इतिहास को आत्मकथा के रूप में लिखते हैं।

11. (क) परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए निम्न तर्क दिए—

1. हमने बचपन में तो बहुत-से धनुष तोड़े हैं, किंतु हे मुनि तब तो कभी क्रोध नहीं किया।
2. हमारी दृष्टि में तो सभी धनुष एक समान हैं। इस धनुष से आपका इतना मोह क्यों है ?
3. एक धनुष के टूट जाने से क्या हानि और क्या लाभ ?
4. श्रीराम जी ने तो इसे नए धनुष के धोखे से देखा था। यह तो रामजी के छूते ही टूट गया इसमें नाम का क्या दोष है।

(ख) 'उत्साह' कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करता है—
- (i) पीड़ित और प्यासे जन की आकांक्षा पूर्ति करने वाले **परोपकारी** रूप में।
- (ii) सामाजिक क्रांति लाने वाले **कवि रूप में**।
- (iii) ग्रीष्म के अतिरेक से जन-मन को राहत दिलवाने वाले **लोक-कल्याणकारी रूप में**।

(ग) 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को यह सीख दी कि वह स्त्री के परंपरागत आदर्श रूप से हटकर जीये। अपनी कोमलता और सुदंरता पर रीझकर उसके पीछे छिपी दुर्बलताओं का समाज को उपहास न करने दे। आग का प्रयोग रोटियाँ सेंकने के लिए करें, स्वयं को जलाने के लिए नहीं। लड़की है यह याद रखें, किंतु लड़की होने के कारण सामाजिक शोषण या अत्याचार का शिकार न बने। वह भीतर से नारी के गुणों का पालन करे परन्तु बाहर से सजग तथा सचेत रहे ताकि उसका शोषण न हो सके। आभूषणों तथा कपड़ों के मोह बंधन में खुशी न बनी रहे।

(घ) संगतकार दूसरों को शीर्ष पर पहुँचाने का कार्य करते हैं। संगतकार के बिना मुख्य कलाकार असफल ही रहता है। संगतकार के माध्यम से कवि नाटक, संगीत, फिल्म तथा नृत्य आदि कलाओं में काम करने वाले सहायक कलाकारों तथा किसी भी क्षेत्र में कार्यरत सहायक कर्मचारियों की ओर संकेत करता है। ये अपने मानवतावादी दृष्टिकोण से मुख्य व्यक्ति की भूमिका को विशिष्ट बनाने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

12. काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर—
- (i) प्रस्तुत काव्यांश की भाषा अवधी है।
- (ii) ये पंक्तियाँ चौपाई छंद में लिखी गई हैं।
- (iii) परशुराम के लिए महायोद्धा एवं फूँक से पहाड़ उड़ाने वाला विशेषणों का प्रयोग किया गया है। परशुराम बूढ़े ऋषि थे उनके लिए ये शब्द कहकर व्यंग्य किया गया है।
- (iv) 'फूँक से पहाड़ उठाना' मुहावरे का प्रयोग करके चौपाइयों में उग्रता एवं आकर्षण बढ़ गया है।
- (v) तत्समशब्द मोहि, लखनु

अथवा

- (i) बच्चे के दूध के दाँत हैं जो अभी नए हैं तथा मुँह खोलते ही दिखाई दे जाते हैं इसलिए कवि ने मुस्कान के लिए 'दंतुरित' विशेषण का प्रयोग किया है।
- (ii) 'धूलि-धूसर' में अनुप्रास अलंकार है।
- (iii) सम्पूर्ण काव्य में वात्सल्य प्रेम की अभिव्यक्ति हो रही है एवं सौंदर्य भाव है।
- (iv) काव्यांश की भाषा सरल, सरस खड़ी बोली है।
- (v) 'पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण' कवि कहता है कि तुम्हारा स्पर्श पाकर कठोर पत्थर दिल पिघलकर जल के समान कोमल बन गया है अर्थात् बच्चों के स्पर्श में जीवंतता है, ममता है, कोमलता है।

13. (क) लेखक ने देखा कि पुत्र की मृत्यु पर भी बाल गोबिन भगत विचलित नहीं हैं और पुत्र के शव के निकट बैठकर लगातार गाए चले जा रहे हैं क्योंकि उनका परमात्मा में विश्वास था कि आत्मा देह को छोड़कर परमात्मा से मिलने चली गई। मृत्यु निश्चित है। इसलिए पतोहू को रोने की बजाय उत्सव मनाने के लिए कह रहे थे।

(ख) पुत्र की मृत्यु पर भगत ने आनंद की बात इसलिए की क्योंकि आत्मा का शरीर रूपी पिंजरे में बंद होने के कारण प्रभु से उसका मिलन नहीं होता। मृत्यु के बाद विरहिनी आत्मा को उसका प्रिय मिल गया है। अत: ऐसे अवसर पर आनंद मनाना चाहिए।

(ग) बालगोविन भगत का विश्वास था कि एक दिन सभी की मृत्यु निश्चित है। आत्मा का परमात्मा से मिलन एक दिन निश्चित है किन्तु यह तो एक ऐसा चरम विश्वास था कि जो सांसारिक प्राणी को मृत्यु के प्रति निडर होने की प्रेरणा देता है।

अथवा

(क) फ़ादर बुल्के संकल्प से संन्यासी थे क्योंकि एक संन्यासी की तरह गेरुए वस्त्र पहन कर उन्होंने जीवन निर्वाह नहीं किया। संन्यासी किसी के दु:ख-सुख से सरोकार नहीं रखते जबकि फ़ादर बुल्के जिससे भी रिश्ते बना लेते थे उसे हमेशा निभाते थे। उसके दु:ख-दर्द में मिलना, सांत्वना के दो शब्द कहकर उसे परम सुख पहुँचाना वे अपना कर्त्तव्य समझते थे। अत: वे मन से संन्यासी नहीं लगते थे।

(ग) संन्यासी सांसारिक रीति-रिवाजों से अलग रहते हैं किसी से मिलते-जुलते भी नहीं, न किसी के दु:ख-सुख से ही सरोकार परन्तु फ़ादर बुल्के एक संन्यासी का जीवन जीते हुए सभी से प्रेम, सुख-दु:ख में पहुँचना, रिश्ते निभाना, दु:ख, तकलीफ के बारे में पूछना, संन्यासियों के व्यवहार से बिल्कुल अलग लगता है।

(घ) फादर जिससे भी रिश्ता बना लेते थे उससे समय निकालकर गर्मी, सर्दी, बरसात झेलकर मिलने अवश्य जाते थे, घर परिवार के बारे में दु:ख-तकलीफ के बारे में पूछते थे और उनके सांत्वना के दो शब्द अमृत वाणी का कार्य करते थे।

14. (क) पिता के साथ घर में होने वाली गोष्ठियों ने मन्नू को देश में चल रही स्वाधीनता से जुड़ी गतिविधियों के प्रति जागरूक बना दिया था। कॉलेज की हिंदी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने उन्हें इन्हीं आंदोलनों से सक्रिय रूप से जोड़ दिया। परिणामस्वरूप मन्नू और उनके साथ की दो-एक लड़कियों के एक संकेत पर सारे कॉलेज की लड़कियाँ बाहर आ जाती थीं। चारों ओर से उमड़ती भीड़ के बीच खड़ी होकर वह बिना किसी संकोच के धुआँधार बोलती जाती थीं। कॉलेज का अनुशासन बिगाड़ने के आरोप में ही उन्हें कॉलेज से बाहर निकाल दिया गया। कॉलेज के प्रिंसिपल ने भी उनकी इन्हीं गतिविधियों से तंग आकर उनके पिता को पत्र लिखा था। अत: कहा जा सकता है कि स्वाधीनता आंदोलन में लेखिका की भी अहम् भूमिका थी।

(ख) 'स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होता है' इस तर्क का खंडन महावीर प्रसाद द्विवेदी ने निम्न प्रकार किया है—

(i) यदि पढ़ाने से स्त्रियों का अनर्थ होता है, तो पुरुषों का अनर्थ भी शिक्षा के कारण ही माना जाना चाहिए। चोरी, डाका, हत्या आदि पढ़ने-लिखने का परिणाम मानकर सभी स्कूल, कालेज आदि बन्द कर दिए जाने चाहिए।

(ii) द्विवेदी जी ने दूसरा तर्क देते हुए कहा कि दुष्यन्त के प्रति शकुन्तला के कटुवचन उसकी शिक्षा के कारण नहीं हैं, बल्कि अपमानित स्त्री के हृदय से निकला स्वाभाविक क्रोध है।

(iii) पढ़ने से अनर्थ बिल्कुल नहीं होता है। अनर्थ तो पढ़े-लिखे तथा अनपढ़ दोनों से ही होते हैं। अत: स्त्रियों का पढ़ाना पारिवारिक सुख, सम्पन्नता के लिए आवश्यक है।

(ग) काशी में हो गए निम्नलिखित परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को परेशान करते थे—

(i) काशी में संगीत, साहित्य और अदब की बहुत-सी परम्पराएँ लुप्त हो चुकी थीं।

(ii) खान-पान की पुरानी चीजें बंद हो गईं थीं। काशी पक्का महल से मलाई तक गायब हो गई। पहले जैसा देशी घी, कचौड़ी और जलेबी नहीं मिलती थी।

(iii) गायकों के मन में संगीत के प्रति प्रेम कम हो गया।

(iv) गायकों द्वारा रियाज करने में कमी आ गई थी।

(v) साम्प्रदायिक सद्भावना भी कम हो गई थी।

(घ) 'बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है।' लेखक के इस विचार से हम सहमत नहीं हैं। क्योंकि लेखक के मन में यह विचार नवाब साहब के नवाबी अंदाज को देखकर आया था। नवाब साहब ने बड़े अंदाज से खीरा धोया, छीला, सजाया, नमक मिर्च छिड़का और फिर उसे नाक तक ले जाकर सूँघकर होठों से छुआकर बाहर फेंक कर लम्बी डकार ली। यह देख लेखक ने सोचा कि जब बिना खाए डकार आ सकती है तो विचार, घटना और पात्रों के बिना कहानी क्यों नहीं लिखी जा सकती किन्तु ऐसा संभव नहीं है।

15. (क) (i) संकीर्ण मनोवृत्ति के कारण हम अपने व्यक्तिगत, जातिगत एवं धार्मिक हितों को सर्वोपरि मानकर उनकी रक्षा में जुट जाते हैं और उन्हें ही सभ्यता और संस्कृति मान बैठते हैं। इस कारण हम इन शब्दों का सही अर्थ समझ ही नहीं पाते।

(ii) संसार परिवर्तनशील है, समय के साथ हर चीज बदलती है तो सत्यता और संस्कृति को भी पकड़ कर नहीं रखा जा सकता। रूप बदलने के कारण इन्हें समझने में कठिनाई होती है।

(iii) इन शब्दों के साथ भौतिक और आध्यात्मिक जुड़ जाने से इनकी अर्थगत जटिलता बढ़ जाती है अत: अर्थ समझने में कठिनाई होती है।

(ख) सेनानी या फौजी न होते हुए भी चश्मे वाले को लोग कैप्टन इसलिए कहते थे, क्योंकि शायद वह आम आदमी होते हुए भी एक सच्चा देशभक्त था। चौराहे पर प्रतिस्थापित नेताजी की जिस मूर्ति पर मूर्तिकार चश्मा लगाना भूल गया था उसकी उस कमी को पूरा करते हुए हमारे देश के गौरव, उन महान नेताजी की प्रतिमा को उसने कभी चश्मे के बिना नहीं रहने दिया। उसकी इसी देशभक्ति को देखकर लोग उसे पागल समझ कर उसका मजाक भी उड़ाते थे।

16. (क) साना-साना हाथ जोड़ि पाठ में यह स्पष्ट किया गया है कि कलाओं के हिम शिखर पूरे एशिया के जलस्तंभ हैं। प्रकृति बड़े नायब ढंग से सर्दियों में बर्फ के रूप में जल संग्रह कर लेती है और गर्मियों में जब पानी के लिए त्राहि-त्राहि मचती है, तो ये ही बर्फ शिलाएँ पिघल-पिघल कर जलधारा बनकर हमारी प्यास बुझाती हैं। इस प्रकार प्रकृति ने बड़े अद्भुत ढंग से जल संचय की व्यवस्था की है।

(ख) हमारे देश की आज़ादी की लड़ाई में समाज के उपेक्षित माने जाने वाले वर्ग ने भी अपने-अपने ढंग से योगदान दिया। नाच-गाकर गुज़ारा करने वाली दुलारी ने विदेशी कपड़ों की होली में अपना योगदान दिया। दुलारी के मौहल्ले के लोग जब अपने विदेशी कपड़े जलाने के लिए डालते हैं, तो अपनी नई साड़ियों का बंडल भी फेंक देती है। उसने मानचेस्टर तथा लंकाशायर में बनी मखमली किनारे वाली धोतियों को त्याग दिया। कजरी गायक टुन्नू का दुलारी के लिए गांधी आश्रम की धोती लेकर आना तथा उस जुलूस में शामिल होना जो विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार स्वरूप निकाला गया था, उसकी देशभक्ति की भावना को दर्शाता है। टुन्नू अंग्रेज़ों की पुलिस के जुल्मों का शिकार होकर शहीद भी हो जाता है।

(ग) हिरोशिमा की घटना ने इंसार को पूरी तरह हिला दिया। आज विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ नहीं है, हर क्षेत्र में दिखाई दे रहा है। भीषणतम परमाणु अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण में इसका सबसे भयानक दुरुपयोग स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। कंप्यूटर जो मानव की सुविधा के लिए बनाया गया था, आज उसके 'नेट' का न जाने कितने ही नकारात्मक रूप में प्रयोग किया जा रहा है। टी. वी., ए.सी. जैसी अन्य उपलब्धियों ने मानव जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। मनुष्य मशीन का गुलाम बन गया है तथा इन उपलब्धियों ने बच्चों का बचपन छीन लिया है तथा घर की चारदीवारी में कैद कर लिया है। उनकी उन्मुक्तता, स्वच्छंदता लुप्त हो गई है। मनुष्य-मनुष्य के बीच का भावनात्मक संबंध लुप्तप्राय हो गया है। मानवीय संवेदनाएँ लुप्त होती जा रही हैं तथा मनुष्य भी मशीनों की तरह 'जड़' हो गया है।

(घ) 'नई दिल्ली में सब था ....सिर्फ नाक नहीं थी।'

लेखक इस कथन के माध्यम से यह कहना चाहता है कि स्वतंत्र भारत में किसी भी सुख-सुविधा की कमी नहीं थी। बस उनमें आत्म-सम्मान की कमी थी। भारत को गुलामी की बेड़ियाँ पहनाने वाले जॉर्ज पंचम जैसे लोगों का सम्मान सुरक्षित रखकर वे औपनिवेशिक दौर की मानसिकता दर्शाना चाहते थे। 200 वर्ष की गुलामी ने उन्हें नपुंसक कर दिया था। वे आज़ादी के बाद भी अंग्रेज़ों की भक्ति करने में आस्था रखते थे। उन्हें गुलाम बनाने वालों को गलत ठहराने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे।

17. (क) विपदा के समय बालक पिता के पास न जाकर माँ की शरण में ही जाता है इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं—

(क) **माँ का आँचल 'प्रेम तथा शांति का चंदोवा' होने के कारण**—विपदा में घबराए हुए बच्चे के लिए माँ का आँचल प्यार और शांति देने वाला चंदोवा है, जिसकी शीतल छांह तले वह स्वयं को सुरक्षित महूसस करता है।

(ख) **स्वभावगत अंतर के कारण**—यद्यपि पिता और पुत्र में गहरा प्रेम था। पिता उसे सुबह से शाम अपने साथ रखते, उसके खेलों में शामिल होकर मित्र की भूमिका निभाते, किंतु माँ जैसी कोमलता और ममता उनके पास नहीं थी, जिसकी ज़रूरत उस समय बच्चे को थी। घबराए हुए बच्चे को अंग लगाना, उसको आँचल से पोंछना, आँखों में आँसू भर लाना, लाड़ से गले लगाना जैसे भाव माँ के पास ही होते हैं, जो ऐसी घड़ी में घावों पर मरहम जैसे लगते हैं।

(ग) **अन्य कारण**—माँ से संतान का संबंध नौ माह पूर्व जुड़ जाता है। इसी कारण बच्चे का माँ से आत्मीय भाव अत्यंत गहरा हो जाता है। जब मृत्यु जैसी आपदा सर्प रूप में सामने आती है तो वह जन्म देने वाली की शरण में ही प्राण रक्षा के लिए दौड़ता हुआ चला जाता है।

(ख) सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता तथा बदहवासी दिखाई देती है, वह उसकी मानसिक रूप से अंग्रेज़ियत की गुलामी की द्योतक है। सत्ता से जुड़े विभिन्न प्रकार के औपनिवेशिक दौर की मानसिकता और विदेशी आकर्षण पर लेखक ने गहरी चोट की है। अंग्रेज़ी हुकूमत से आज़ादी मिलने के बाद आज भी सरकारी तंत्र में अंग्रेज़ी शासकों और संस्कृति का प्रभाव सर्वत्र छाया हुआ दृष्टिगोचर होता है। आज विदेशी दिल-दिमाग, तौर-तरीके और रहन-सहन हिंदुस्तानियों के सिर चढ़कर बोल रहे हैं। हम विदेशी बातों को बड़ी शान से अपना रहे हैं और भारतीय संस्कृति को विस्मृत कर उसे ठुकरा रहे हैं, वस्तुत: यह मानसिकता हमारे भीतर पनपती हीन-ग्रंथि को उजागर करती है।

DELHI SET-II **Code No. 3/1/2**

खण्ड 'ख'

निबन्ध

3. (क)

प्रदूषण का भयावह रूप

संकेत बिंदु—1. प्रदूषण की परिभाषा, 2. प्रदूषण विज्ञान की देन, 3. प्रदूषण के विभिन्न रूप, 4. प्रदूषण निवारण के उपाय।

मनुष्य के उत्तम स्वास्थ्य के लिए वातावरण का शुद्ध होना परमावश्यक होता है। मनुष्य पर्यावरण की उपज होता है। भाव यह है कि मानव-जीवन को पर्यावरण की परिस्थितियाँ व्यापक रूप से प्रभावित करती हैं। प्रकृति का शुद्ध, सात्विक और संतुलित संसर्ग पाकर मनुष्य दीघार्यु पाने की कामना करता रहा है, परंतु जब से व्यक्ति ने प्रकृति पर विजय पाने का अभियान शुरू किया है, तभी से मानव प्रकृति के प्राकृतिक सुखों से भी हाथ धो बैठा क्योंकि मानव ने प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ दिया है जिससे अस्वास्थ्यकारी परिस्थितियाँ जन्म ले रही हैं। संतुलित पर्यावरण मानव-जीवन-क्रम को सुचारु रूप से संचालित करता है, पर जब पर्यावरण में निहित एक या अधिक तत्वों की मात्रा अपने निश्चित अनुपात से बढ़ जाती है या पर्यावरण में विषैले तत्वों का समावेश हो जाता है, तो वह पर्यावरण प्राणियों के लिए अत्यंत घातक सिद्ध होता है। पर्यावरण में होने वाले इस घातक परिवर्तन को ही प्रदूषण की संज्ञा दी जाती है। इस प्रकार प्रदूषण जलवायु या भूमि के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों में होने वाला कोई भी अवांछनीय तथा अनिष्टकारी परिवर्तन है।

प्रदूषण की समस्या विज्ञान की देन है क्योंकि विज्ञान के आधुनिक आविष्कारों ने प्राकृतिक वातावरण को दूषित कर दिया है। प्रदूषण की भयंकर समस्या ने समूची मानव-जाति के लिए एक बड़ा खतरा उत्पन्न कर दिया है। प्रदूषण का भयंकर परिणाम देखना हो तो जालंधर, फदीराबाद, जमशेदपुर, अहमदाबाद, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई जैसे बड़े-बड़े औद्योगिक केंद्रों में जाकर देखा जाए कि वहाँ लोग किस प्रकार नारकीय जीवन बिताने के लिए विवश हैं।

यद्यपि प्रदूषण के विभिन्न रूप हो सकते हैं, तथापि इनमें वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण तथा ध्वनि प्रदूषण मुख्य हैं। इन सभी में वायु प्रदूषण सबसे अधिक व्यापक और हानिकारक है। वायु प्रदूषण की समस्या मानव अस्तित्व के लिए एक भयंकर खतरा है। दूषित वायु में साँस लेने से व्यक्ति का स्वास्थ्य तो खराब होता ही है, साथ ही लोगों का जीवन-स्तर भी प्रभावित होता है। वायु प्रदूषण का प्रभाव आने वाली संतानों पर भी पड़ता है। लकड़ी, कोयले, खनिज तेल तथा कार्बनिक पदार्थों के ज्वलन के कारण वायुमंडल दूषित हो जाता है औद्योगिक संस्थानों से निकलने वाली सल्फर डाई ऑक्साइड और हाइड्रोजन सल्फाइड गैसें प्राणियों तथा अन्य पदार्थों को काफी हानि पहुँचाती हैं। नगरों में रेलों, मोटरों, ट्रकों, कारों आदि से निकलने वाला धुआँ वायु प्रदूषित करता है। विशालकाय कारखानों की धुआँ उड़ाती चिमनियों से वातावरण में ज़हर घुल रहा है। जनसाधारण की उपेक्षा भी समस्या को गंभीर बनाती है। लोगों द्वारा अपने घरों की सफाई कर दूसरे के घरों के सामने फेंकने, सड़कों और नालियों की सफाई की ओर पर्याप्त ध्यान न देने से भी वायु प्रदूषण बढ़ता है।

थर्मल पावर स्टेशनों से उड़ने वाले धुएँ में कोयले की राख भारी मात्रा में पाई जाती है जिससे अत्यधिक वायु प्रदूषण होता है। गंदी बस्तियों, तंग गलियों और भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में निवास करने वाले निर्धन वर्ग किसी न किसी रोग से ग्रस्त दिखाई देते हैं। वायु प्रदूषण से होने वाली हानि का अनुमान ताजमहल के बदलते रंग से ही लगाया जा सकता है। मथुरा के तेलधोशक कारखाने के दूषित परिणामों के कारण ताजमहल अपना भव्य स्वरूप खोने लगा है। जब पत्थर जैसी कड़ी तथा निर्जीव वस्तु पर प्रदूषण का इतना भयंकर प्रभाव पड़ा है, तो मानव शरीर पर इसकी क्या प्रतिक्रिया होगी, इसका अनुमान लगाने से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वायु प्रदूषण के कारण हृदय रोग, कैंसर, फेफड़ों के रोग, श्वास के रोग, सिरदर्द, जी मिचलाना, मानसिक रोग, नेत्र आदि का प्रकोप हो जाता है।

जल सभी प्राणियों के जीवन के लिए अनिवार्य है। पेड़-पौधे भी आवश्यक पोषक तत्व जल से ही घुली अवस्था में ग्रहण करते हैं। जब औद्योगिक अनुपयोगी वस्तुएँ जल में मिला दी जाती हैं, तो वह जल पीने योग्य नहीं रहता। समुद्र में जहाजों से तेल का रिसना, नदियों में औद्योगिक रसायनों का बहकर जाना, गंदी नालियों का पानी और मैला नदियों में गिराया जाना आदि जल प्रदूषण के लिए उत्तरदायी हैं। इनसे टायफाइड, हैजा, पेचिश, पीलिया, आँत के रोग आदि के फैलने का खतरा बना रहता है। जब से मनुष्य ने वनों को काटना प्रारंभ किया है, तब से प्रदूषण का खतरा निरंतर वृद्धि पर है।

बड़े-बड़े नगरों में ध्वनि प्रदूषण भी गंभीर समस्या बनकर सामने आ रहा है। अनेक प्रकार के वाहन, लाउडस्पीकर, औद्योगिक संस्थानों की मशीनों ने शोर को जन्म दिया है। निरंतर शोर सुनते रहने से बहरा होने का तो भय है ही, साथ ही मानसिक तनाव, उच्च रक्तचाप तथा हृदय रोग की शिकायतों में भी वृद्धि हो रही है।

प्रदूषण को रोकने के लिए वायुमंडल को साफ-सुथरा रखना परमावश्यक है। इस ओर जनता को जागरूक किया जाना चाहिए। सड़कों के किनारे, रेलवे परिपथ के साथ-साथ ग्रामीण चरागाह और सरकारी भूमि पर अधिकाधिक वृक्षारोपण किया जाना चाहिए, बस्ती व नगर के समस्त वर्जित पदार्थों के निष्कासन के लिए सुदूर स्थान पर समुचित व्यवस्था की जाए, प्रदूषण फैलाने वाले कारखानों में ट्रीटमेंट प्लांट लगाने के निर्देश दिए जाने चाहिए। जो ऐसा न करें उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। सरकार को चाहिए कि जो औद्योगिक प्रतिष्ठान शहरों तथा घनी आबादी के बीच हैं, उन्हें नगरों से दूर स्थानांतरित करने का पूरा प्रबंध करे, सौर ऊर्जा को बढ़ावा दें, वन संरक्षण तथा वृक्षारोपण को सर्वाधिक प्राथमिकता दें जिससे प्रदूषणयुक्त वातावरण का निर्माण हो सके।

(ख) **भारतीय किसान**

संकेत बिंदु—(1) कृषक संस्कृति, (2) सादा जीवन, (3) परिश्रमी जीवन, (4) गरीबी, (5) किसान की दुर्दशा के कारण, (6) किसानों की दशा में सुधार

गाँधीजी कहा करते थे—"भारत की संस्कृति कृषक-संस्कृति है। भारत माता का हृदय गाँवों में बसता है। गाँवों में ही सेवा और परिश्रम के अवतार किसान बसते हैं। ये किसान नगरवासियों के अन्नदाता हैं, सृष्टिपालक हैं।" भारतीय गाँव और महानगर में वही संबंध है, जो सीधे-सादे बूढ़े बाप और उसकी अल्ट्रा मॉडर्न संतान में होता है। गाँव शहरों को सींचते हैं। उन्हें धन, श्रम, माल देते हैं। परंतु शहर के लोग फिर भी गाँव के सीधे-सादे किसान की ओर ताकते तक नहीं। जबकि किसान हमें खाना देते हैं, जीवन-यापन के साधन देते हैं। इन्हीं किसानों के द्वारा ही हमें कच्चा माल प्राप्त होता है। एक तरह से हमारे शहरों के बड़े-बड़े, धंधे इन्हीं किसानों पर निर्भर हैं।

भारतीय किसान सीधा-सादा जीवन यापन करता है। सादगी का यह गुण उसके तन से ही नहीं मन से भी झलकता है। सच्ची बात को सीधे-सादे शब्दों में कहना उसका स्वभाव है। भारत की अधिकांश जनता गाँव में रहकर खेती करती है। गाँवों में प्रकृति का साथ रहता है। शहरों के ज्यादातर लोग गाँवों के सीधे-सादे किसानों को घृणा की भावना से देखते हैं। खेती के कार्य को बहुत तुच्छ समझते हैं जबकि किसान बहुत कठोर जीवन जीता है। वह धरती की छाती को अपने परिश्रम के जल से सींचता है। गर्मी की लू, सर्दी की ठंडी

रातें, वर्षा की उमड़ती-घुमड़ती घटाएँ उसका रास्ता रोकती हैं किंतु वह किसी की परवाह नहीं करता। हर मौसम में अविचल रहकर कर्म करना उसका स्वभाव है। हमारे किसान खूब परिश्रम करते हैं जिसके कारण उनका शरीर हृष्ट-पुष्ट रहता है। उन्हें शहरों के लोगों की तरह न बीमारियाँ और न ही मानसिक परेशानियाँ घेरती हैं। भारत के अधिकांश किसान गरीबी में जीते हैं। ज्यादातर किसानों के पास जमीन बहुत कम है। छोटे किसान दिनभर मेहनत करके भी भरपेट खाना नहीं कमा पाते। उनके पास खेती के उन्नत साधनों का अभाव रहता है। गरीब किसान उन्नत बीज, खाद, कीटनाशक आदि का उपयोग उनके काफी महंगे होने के कारण नहीं कर पाते। अधिकांश किसान पढ़े-लिखे नहीं हैं, जिसकी वजह से वे बैंकों, सार्वजनिक संस्थाओं से दूर रहते हैं। अज्ञान के कारण वे अंधविश्वासों में आस्था रखते हैं। परिणामस्वरूप उनका परिवार बढ़ता जाता है और जमीन कम होती जाती है। किसान की अज्ञानता एवं निरक्षरता के कारण ही व्यापारी लोग उन्हें आसानी से ठग लेते हैं। अधिकांश गरीब किसानों के बच्चे अज्ञान और अशिक्षा में पलते हैं। इस कारण वे आगे चलकर अज्ञान, अशिक्षा और अंधविश्वास में जीते हैं। और इसी अज्ञान के कारण वे पढ़े-लिखों की दुनिया में ठगे जाते हैं।

भारतीय किसानों की दशा आज बहुत दयनीय बनी हुई है। वे अशिक्षा, दरिद्रता एवं पिछड़ेपन में जी रहे हैं। परंतु किसानों की दशा में सुधार लाने के अनेक उपाय हैं। भारत की अधिकतर जनता कृषि कार्यों में लगी हुई है इसलिए कृषि को बैंकों, सरकार तथा सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा मदद दी जानी चाहिए। किसानों को उन्नत बीज, खाद, उर्वरक, कीटनाशक सस्ते दामों पर उपलब्ध कराए जाने चाहिए। उनके बच्चों को सस्ती शिक्षा देने की व्यवस्था की जानी चाहिए। उनकी मूलभूत आवश्यकताओं; जैसे—सड़क, बिजली, पानी आदि पर ध्यान दिया जाना चाहिए। किसानों के द्वारा उत्पादित फसल को अच्छे दामों पर बेचने का प्रबंध किया जाना चाहिए और फसल की बिक्री के समय बिचौलियों की भूमिका को खत्म करने के प्रयास करने चाहिए। अगर इन सभी बातों पर ध्यान दिया जाए तो आशा की जानी चाहिए कि हमारे किसान भी खुशहाल जीवन जी पाएँगे और इसी लगन और मेहनत से भारतवर्ष की प्रगति में एक महत्वपूर्ण किरदार निभाएँगे।

(ग) **विद्यालय का सांस्कृतिक कार्यक्रम**

मानव के पूर्ण विकास के लिए पुस्तकीय ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है। इससे छात्र का मन ऊबने लगता है। ऐसे अवसर पर वह विश्राम चाहता है। मानव के इस मनोविज्ञान को लक्ष्य में रखते हुए प्राय: सभी संस्थाएँ एकरस कार्य की नीरसता को दूर करने के लिए विविध उत्सवों का आयोजन करती हैं।

विद्यालयों के जीवन में वार्षिकोत्सव का विशेष महत्व है। विद्यालयों के आत्म-संयम तथा विद्यालय की प्रगति में सहयोग देना एवं अभिभावकों से संपर्क स्थापित करना भी इसका लक्ष्य होता है। इसके आयोजन से विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शन, आत्माभिव्यक्ति तथा उत्तरदायित्व की भावना को बहिर्मुखी होकर विकसित होने का पूर्ण अवसर प्राप्त होता है।

हमारा विद्यालय प्रत्येक दृष्टिकोण से सर्वश्रेष्ठ एवं महान है। हमारे विद्यालय के संस्थापक श्री जौहरीमल जैन थे। उन्होंने अपने खून-पसीने से सींचकर इसे एक विशाल वृक्ष के रूप में रोपित किया था। इस विद्यालय का प्रारंभ 1970 ई. में बहत अल्प छात्रों की संख्या से हुआ और आज इस विद्यालय में लगभग एक सहस्र छात्र अध्ययन करते हैं। हमारा विद्यालय विद्यार्थियों की बहुमुखी प्रगति की दिशा में सतत् प्रयत्नशील रहता है। इस उद्देश्य को उसने अपने वार्षिकोत्सव में भी प्रदर्शित किया। हमारे विद्यालय का वार्षिकोत्व मानो संस्कृति का लघु संस्करण है।

हमारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव का प्रारंभ वसंत पंचमी से एक सप्ताह पूर्व हो जाता है। इस वर्ष हमारे विद्यालय की कार्यकारिणी समिति ने इस उत्सव को विशाल रूप से मनाने का विचार किया। इस वर्ष के वार्षिकोत्सव को विशाल स्वर्ण जयंती समारोह के रूप में मनाने के लिए वसंत पंचमी का दिन निश्चित किया गया। इस घोषणा का छात्रों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। प्रत्येक छात्र इस तिथि की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करने लगा और कार्यक्रमों में भाग लेने की तैयारी करने लगा। विद्यालय का समस्त शिक्षक वर्ग, चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी, कार्यकारिणी के सदस्यगण और छात्रों ने इस उत्सव हेतु जमकर तैयारी की।

वसंत पंचमी के दिन विद्यालय पूर्ण रूप से सज उठा। विद्यालय प्रांगण में एक विशाल मंच बनाया गया। मुख्य अतिथि तथा विशिष्टजनों के बैठने के लिए विशेष प्रबंध किया गया। छात्रों के बैठने के लिए कुर्सियों का प्रबंध था। तीन बजते ही आमंत्रित व्यक्तियों का आगमन आरंभ हो गया। बालचर उन्हें यथास्थान बैठाने लग गए। लगभग 3.45 पर मुख्य अतिथि पधारे। प्रधानाचार्य महोदय और प्रबंधकारिणी समिति के अन्य सदस्यों ने उनकी अगवानी की। तभी विद्यालय में बैंड की सुमधुर ध्वनि गूँज उठी। एन.सी.सी. के छात्रों ने मुख्य अतिथि को 'गार्ड ऑफ आनर' दिया। मंच पर उनका स्वागत पुष्पमालाओं से किया गया।

सर्वप्रथम प्रधानाचार्य महोदय ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। इसमें वर्ष भर की गतिविधियों का लेखा-जोखा उपस्थित किया गया था। तत्पश्चात् कुछ छात्रों ने शारीरिक व्यायाम का प्रदर्शन किया। फिर कवि दरबार ने समाँ बाँध दिया। 'राखी की लाज' एकांकी अभिनीत किया गया। कुछ छात्रों ने मोनो एक्टिंग का प्रदर्शन किया फिर संगीत का कार्यक्रम चला।

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी अध्यापक-अध्यापिकाओं ने अपनी अपनी कक्षा से लड़के एवं लड़कियों को नाटक एवं संगीत प्रस्तुति में पूरा-पूरा सहयोग करके बच्चों को आठ दिन पहले से ही निरंतर अभ्यास कराया जो आज सफल हुआ लगभग 4-5 नाटकों की प्रस्तुत की गई तथा 3 ग्रुप डाँस एवं अन्य प्रकार के संगीत प्रोग्राम प्रस्तुत किए। सभी छात्र-छात्राओं के अभिभावक अपने

सहयोगियों के साथ कार्यक्रम देखने के लिए आये सभी के बैठने की उचित व्यवस्था थी जिसका प्रबन्ध क्रीड़ा शिक्षक तथा स्काउट और गाइड कर रहे थे, सभी कार्यक्रमों की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई।

4. छोटे भाई को पत्र

ए-1/75, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली।
दिनांक : 17-2-200X

प्रिय सुदेश

प्रसन्न रहो।

तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर चिंतित होना स्वाभाविक था कि अभी भी तुम्हारा स्वास्थ्य पूरी तरह ठीक नहीं हुआ है। मुझे तुम्हारे मित्र दिनेश से पता चला है कि तुम सुबह देर से उठते हो तथा तुमने व्यायाम करना भी छोड़ दिया है जिसके कारण न तो तुम्हें ठीक से भूख लगती है और न ही खाया-पिया ठीक से हजम होता है।

प्रिय सुदेश व्यायाम और योग करने से शरीर में रक्त का संचार बढ़ता है, माँसपेशियाँ सुदृढ़ होती हैं तथा आलस्य दूर हो जाता है। व्यायाम तथा योग करने वाले छात्रों का मन पढ़ाई में खूब लगता है तथा उनकी स्मरण शक्ति भी बढ़ती है। तुमने पढ़ा ही होगा—'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है।' अत: मेरी सलाह मानो और नियमित योग तथा व्यायाम करने का अभ्यास डालो।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम मेरी सलाह पर तुरंत अमल शुरू कर दोगे तथा पत्र द्वारा मुझे सूचित भी करोगे।

तुम्हारा अग्रज
सुयश जैन

अथवा

सेवा में,
संपादक
पंजाब केशरी,
चंडीगढ़ (पंजाब)

विषय : रेल आरक्षण व्यवस्था में सुधार की प्रशंसा

महोदय,

अत्यंत खुशी के साथ आपको लिख रहा हूँ कि आजकल रेल विभाग ने जनता की सुविधा हेतु सभी प्रमुख स्टेशनों पर आरक्षण व्यवस्था में बहुत बड़ा सुधार कर दिया है, सारा काम कम्प्यूटराइज्ड हो गया है। यात्री का आरक्षण पाँच मिनट में हो जाता है तथा यह भी पता चल जाता है कि उसकी कोच तथा सीट संख्या कितनी है। आरक्षण भी लंबे समय में निश्चित नहीं होता कुछ दिनों में ही निश्चित हो जाता है तथा अब यात्री किसी भी स्टेशन से कहीं का भी रजिस्ट्रेशन करा सकता है, कोई अतिरिक्त चार्ज भी नहीं लगता। अत: रेल आरक्षण व्यवस्था में जो सुधार हुआ है वह प्रशंसनीय है।

5. निर्देशानुसार उत्तर—

(i) मिश्र वाक्य में—मैंने एक शब्द कोश देखा जो बहुत अच्छा था।
(ii) संयुक्त वाक्य में—उसने पुलिस को देखा और उसका पसीना छूट गया।
(iii) सरल वाक्य में—एक धमाके होने पर ही चारों ओर चीख पुकार मच गई।

6. वाच्य परिवर्तन—

(i) कर्म वाच्य में—निष्ठावान कर्मयोगियों के द्वारा ही सदा ऐसे काम किए जाते हैं।
(ii) कर्तृवाच्य में—नेहरू जी ने अपने देश के लिए समस्त सुख-सुविधाएँ त्याग दीं।
(iii) भाववाच्य में—उस बेचारी के द्वारा रोया भी नहीं जा सकता।

7. अलंकार—

(i) सत्य सनेह क्षील सुख सागर—अनुप्रास।
(ii) पहेली सा जीवन है व्यस्त—उपमा।
(iii) प्रीतिनदी में पाँउ न बोर्‌यौ , दृष्टि न रूप परागी—रूपक।

8. (क)

क्रिया पद	**भेद**
(i) निकाला	सकर्मक
(ii)बैठा था	अकर्मक

(ख)

अव्यय	भेद
इसलिए	समुच्चयबोधक अव्यय
बल	कालवाचक क्रिया विशेषण

9.

पद	परिचय
मुझे—	पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, एकवचन, पुल्लिग, कर्ताकारक, याद आती है, क्रिया का कर्ता।
घर की—	जाति वाचक संज्ञा, एक वचन, पुल्लिग, सम्बन्ध कारक।

DELHI SET-III — Code No. 3/1/3

खण्ड 'ख'

3. (क) **हमारे आदर्श पड़ोसी**

संकेत बिंदु : 1. मानव सामाजिक प्राणी है, 2. पड़ोस के अध्यापक, 3. पेट में दर्द, 4. अध्यापक की मदद, 5. संगीत प्रेमी अध्यापक।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह अपने सुख-दुख व प्रत्येक कार्य में दूसरे की सहायता लेता है। मनुष्य की दैनिक आवश्यकताएँ भी एक-दूसरे के सहयोग से पूरी होती हैं। यह सहयोग अपने पास रहने वाले व्यक्ति से ज्यादा होता है। पड़ोसी से प्रतिदिन का संपर्क रहता है। किसी भी मुसीबत में पड़ोसी सबसे पहले काम आते हैं। अच्छे पड़ोसी भाग्य से ही मिलते हैं।

कवि रहीम ने ठीक ही कहा है—

रहिमन तीन प्रकार ते, हित अनहित पहचान।
परबस परे, पड़ोस बस, परे मामला जान।।

पड़ोस में रहकर व्यक्ति को जितनी अच्छी तरह परखा जा सकता है उतना किसी और प्रकार से नहीं। जिस प्रकार माता-पिता के संस्कारों का प्रभाव बालक पर पड़ता है, उसी प्रकार पड़ोस में रहने वालों के अच्छे या बुरे विचारों का प्रभाव भी अवश्य पड़ता है। जिस प्रकार खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है, उसी प्रकार पड़ोसी को देखकर दूसरा पड़ोसी भी बहुत कुछ ग्रहण कर लेता है। वे अत्यंत व्यवहार-कुशल हैं। शुरू-शुरू में हम बच्चे उनसे बहुत डरा करते थे क्योंकि उनकी बड़ी-बड़ी मूँछें थीं तथा चेहरा भी रोबीला था। मगर एक दिन की घटना ने सब कुछ बदल दिया। एक दिन मेरे माता-पिता कहीं बाहर गए हुए थे। मैं घर में अकेला था। अचानक मेरे पेट में भयानक दर्द शुरू हो गया। मैं दर्द के मारे कराहने लगा। मैं अपने पड़ोसी अध्यापक के घर जाने का साहस न कर सका। दर्द बढ़ता गया और मैं ज़ोर-ज़ोर से कराहने लगा। तभी पता नहीं कैसे उन अध्यापक महोदय ने मेरी आवाज़ सुनी और वे दौड़े-दौड़े आए। मेरी हालत देखकर तुरंत ही उन्होंने एक टैक्सी मँगवाई और मुझे अस्पताल ले गए। अस्पताल में मेरा दर्द ठीक हो गया। अध्यापक महोदय मेरे पास ही बैठे रहे। लगभग तीन घंटे वे मेरे पास ही रहे। डाक्टरों की सलाह पर वे मुझे घर ले आये और घर पर भी मेरे साथ ही रहे। उनकी उदारता, सहानुभूति तथा प्रेम-भावना का मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ा। मैं आज तक उन्हें बहुत सम्मान देता हूँ।

मेरी दृष्टि में वे एक आदर्श पड़ोसी हैं। जब मेरे माता-पिता आए और उन्हें सारी घटना का पता चला तो उन्होंने अध्यापक महोदय को बहुत धन्यवाद दिया; मगर अध्यापक महोदय ने कहा—"यह तो मेरा फर्ज़ था, पड़ोसी होने के नाते।"

वे अध्यापक महोदय अकेले रहते हैं। उनकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी है तथा एक पुत्र और एक पुत्री का विवाह हो गया है। वे कहीं दूसरे शहर में रहते हैं। इन्हें संगीत से बहुत प्रेम है। खाली समय में वे संगीत का अभ्यास करते हैं। वे मीरा, कबीर और सूरदास के भजन बड़े भक्ति-भाव व सुर-ताल में गाते हैं।

इसकी दिनचर्या निश्चित है। सुबह चार बजे उठकर स्नान-ध्यान करना, संगीत का अभ्यास करना, फिर अध्यापन कार्य करना आदि निर्धारित रूप में प्रतिदिन होता है।

मुझे पता चला है कि वे निर्धन छात्रों को मुफ्त ट्यूशन पढ़ाते हैं। किसी-किसी को तो किताबें-कापियाँ भी दिलवा देते हैं। अपने विद्यालय में भी वे सबसे अधिक लोकप्रिय अध्यापक हैं। एक सच्चे पड़ोसी के रूप में मेरे माता-पिता उनका बड़ा सम्मान करते हैं। उनकी मूँछें देखकर छोटे बच्चे भले ही डर जाएँ, पर जो भी एक बार उनके संपर्क में आ जाता है, वह उन्हें भूल नहीं पाता।

जब मैंने उनके हृदय की कोमलता एवं दया को परख लिया तो मैंने अपने सभी साथियों से उनकी प्रशंसा करना शुरू कर दिया, साथियों को विश्वास नहीं हो रहा था कि गणित के अध्यापक इतने कोमल एवं दयावान हो सकते हैं परन्तु यह सच था कई बार मेरे साथी अपनी समस्याएँ लेकर उनके घर आए तो उन्होंने निसंकोच सभी की समस्याएँ सुलझाकर खुशी-खुशी विदा किया। मेरी भावना है कि ऐसे पड़ोसी ईश्वर सभी को दे।

(ख) **अपना देश भारत**

संकेत बिंदु : 1. भारतीय संस्कृति की विशेषता, 2. भारत प्राचीनतम राष्ट्र 3. विभिन्न धर्मों व संस्कृतियों का संगम स्थल 4. महान विभूतियों का देश।

महान् उर्दू कवि इकबाल ने ठीक ही कहा है—

'यूनान-ओ मिस्त्र रूमाँ सब मिट गए जहाँ से,
बाकी अभी तलक है नामोनिशां हमारा,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे ज़हाँ हमारा।'

उनकी ये पंक्तियाँ भारत की संस्कृति-सभ्यता की भव्यता के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करती है। वैसे तो सभी को अपनी मातृभूमि पर गर्व होता है, पर भारत-भूमि तो स्वर्ग से भी महान् है।

उत्तर में हिमालय की हिममंडित गगनचुंबी चोटियाँ, जिन पर श्वेत बर्फ चाँदी के समान चमकती है, तीन ओर से समुद्र जिसके चरण पखारता है, गंगा-यमुना जैसी नदियाँ जिसके हृदय का कंठहार हैं तथा जहाँ सूर्य की किरणें केसर के फूलों की तरह शोभा बरसाती हैं—ऐसा देश है भारत जिसकी अन्य विशेषताएँ हैं—विभिन्नता में एकता तथा प्राचीन संस्कृति। षड् ऋतुएँ केवल इसी देश के निवासियों को सुख-शांति पहुँचाने आया-जाया करती हैं।

भारत एक प्राचीनतम राष्ट्र है। यह विश्व सभ्यता का जनक है। संसार के अन्य देश जब अशिक्षित तथा नग्नावस्था में ही थे तब भी यह उन्नति के चरमोत्कर्ष पर था। भारत ने ही मानव को सभ्यता का पहला पाठ पढ़ाया। विश्व की प्राचीनतम पुस्तक 'वेद' इसी देश में उपलब्ध है तथा विश्व की प्राचीनतम भाषा संस्कृत भी इसी देश की देन है। उपनिषद्, पुराण, दर्शन, गीता, रामायण जैसे महान एवं पवित्र ग्रंथों की रचना इसी देश में हुई। इसी धरा ने अध्यात्म का पाठ समूची मानवता को पढ़ाया तथा ज्ञान, भक्ति, कर्म की त्रिवेणी प्रवाहित की।

मेरा देश भारत विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों का संगम स्थल है। केवल इसी देश में विभिन्न संस्कृतियों को समान रूप से फलने-फूलने तथा पल्लवित होने का अवसर प्राप्त हुआ। इस देश की संस्कृति में विभिन्न संस्कृतियों की धाराएँ मिलीं तथा वे सभी एक प्राण हो गईं। प्राकृतिक रूप से ही सुंदर नहीं, यह कला की दृष्टि से भी एक महान देश है। भारत की प्राचीन वास्तुकला आज के वैज्ञानिकों को विस्मय में डाल देती है। भारतीय कला और कारीगरी द्वारा निर्मित वस्तुएँ अनेक देशों में जाती हैं।

मेरे देश भारत में अनेक मंत्रद्रष्टा ज्ञानी, ऋषि-महात्माओं एवं विद्वानों ने जन्म लिया। राम, कृष्ण, महावीर, बौद्ध, नानक, कबीर, विवेकानंद, गांधी, अरविंद जैसे महामानवों ने इसी धरा पर जन्म लेकर इसका मान बढ़ाया। इसी धरती पर शिवाजी, राणा प्रताप, दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई जैसे वीरों ने जन्म लिया, इसी धरती पर कर्ण जैसे दानी, हरिश्चंद्र जैसे सत्यवादी, अर्जुन जैसे धनुर्धर, कालिदास, वाल्मीकि, तुलसीदास, सूरदास तथा रवींद्रनाथ टैगोर जैसे अनेक कवियों ने जन्म लिया। इसी पुण्यभूमि में आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, रामानुज, जगदीशचंद्र बसु, चंद्रशेखर, वेंटरमन तथा होमी भाभा जैसे महान वैज्ञानिकों ने जन्म लिया।

भौतिकवादी जगत को 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा:' का आदर्श भारत ने ही कर दिया, मेरे देश ने ही संसार को अपरिग्रह का संदेश दिया, इसी धरा ने समूची मानवता को 'स्व' के संकुचित दायरे से निकालकर 'पर' की परिधि में जाने का मार्ग प्रशस्त किया। भारत भूमि ने ही स्वार्थ, संघर्ष, असंतोष, मद, अहंकार तथा जड़ता से त्रस्त मानव को 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्' का सूत्र दिया तथा 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया' का पावन मार्ग दिखाया। सत्य, अहिंसा, अस्तेय जैसे मानवीय गुणों की सृष्टि भी इसी धरा पर हुई।

इसमें संदेह नहीं कि कालांतर में आपसी फूट, कलह, वैमनस्य तथा संकीर्णताओं के कारण मेरे देश को सदियों तक दासता का अभिशाप सहना पड़ा, परंतु परतंत्रता के युग में भी इसकी संस्कृति पर आँच न आने पाई। अनेक आक्रमणकारियों ने इसे मिटाना चाहा, यह पर मिट न सकी। भारतवासियों ने अपने सतत् परिश्रम तथा बलिदान से पुन: स्वतंत्रता प्राप्त की और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नेहरू जी के नेतृत्व में राष्ट्र-निर्माण का कार्य पुन: आरंभ हुआ तथा यह विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में विकसित हुआ। आज मेरा देश एशिया के महान राष्ट्रों में गिना जाता है। अपने औद्योगिक विकास, परमाणु विज्ञान तथा अंतरिक्ष अनुसंधान, चिकित्सा विज्ञान एवं कृषि-क्षेत्र की महान उपलब्धियों के कारण उसकी गिनती विश्व के प्रमुख देशों में की जाती है।

मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व है, क्योंकि मुझे ऐसी महान एवं पुण्यभूमि पर जन्म लेने का सौभाग्य मिला। भारत अजर है, अमर है तथा पुण्यभूमि है। मैं जीवनपय ॅत इसी के लिए कार्य करता रहूँ। इसी की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहूँ—ऐसी प्रभु से मेरी कामना है।

(ग) **भिन्नता के वाताक्ररण में जनजीक्न**

भारत एक विशाल देश है, हिमालय से कन्याकुमारी तक, बंगाल तथा असम की पहाड़ियों से कश्मीर तक फैला हुआ है। जनसंख्या की दृष्टि से संसार में इसका दूसरा स्थान है। विभिन्न जातियों, जनजातियों, विभिन्न धर्मों, विभिन्न समुदायों का एक मिलाजुला भंडार देश में फैला हुआ है। हमारे देश के संविधान में 18 भाषाएँ स्वीकृत हैं। इनके अतिरिक्त अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ भी हैं। उत्तर भारत का निवासी दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों की भाषाओं से बिल्कुल दूर रहता है। तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम आदि दक्षिणी भाषाओं की बनावट हमारी मातृभाषा से बिल्कुल भिन्न है। हिन्दी भाषा भाषी व्यक्ति के लिए लिखना, पढ़ना, बोलना बहुत कठिन हो जाता है।

मेरे पिताजी देना बैंक में आगरा शहर की शाखा में कार्यरत थे तथा हम लोग उत्तर भारत के मशहूर शहर देहरादून के निवासी हैं। हमारी मातृभाषा हिन्दी है तथा पिताजी शुरू से ही उत्तर प्रदेश के बड़े शहरों में ही कार्यरत रहे हैं। मैंने इस वर्ष हाईस्कूल की परीक्षा

सीबीएसई बोर्ड से दी है तथा मेरा अध्ययन का माध्यम अंग्रेजी है। मेरी एक बहिन है जो बी. एस-सी कर रही है। इस वर्ष मेरे पिताजी का स्थानान्तरण चेन्नई के देना बैंक में हो गया है। बैंक की शाखा शहर से बाहर 20 किलोमीटर के देहाती क्षेत्र से जुड़ी है। पिताजी के स्थानान्तरण के साथ ही हम लोगों को भी चेन्नई ही स्थानान्तरित होना पड़ा है और हम लोगों ने परीक्षाएँ सम्पन्न होने के बाद 15 अप्रैल को ट्रक में सामान भर कर आगरा से चेन्नई के लिए रवाना कर दिया क्योंकि पिताजी को बैंक के आसपास ही एक कालोनी में एक किराये का घर मिल गया था। पिताजी के साथ मेरा परिवार ट्रेन में रिजर्वेशन के साथ चेन्नई के लिए रवाना हो गया और लगभग 40 घंटे के सफर के बाद वहाँ पहुँच गये अभी ट्रक नहीं पहुँच पाया था। किराए के मकान पर पहुँचकर कुछ चैन की साँस ली क्योंकि लंबे सफर के कारण बहुत थक गये थे। दूसरे दिन ट्रक का सामान भी पहुँच गया, पिताजी ने कुछ मजदूरों की सहायता से सामान घर में रखवाया तथा हम लोगों को दो दिन तक बड़ी मशक्कत करनी पड़ी,जैसे-तैसे सब ठीक हुआ।

हमारी बोलचाल की भाषा हिन्दी थी कुछ बहिन भाई, पिताजी अंग्रेजी भी समझते, बोलते थे परंतु माँ का केवल हिन्दी से ही संपर्क था लेकिन वहाँ कन्नड़, तेलुगू भाषा का ही वातावरण था हमारी समझ में बिल्कुल कुछ नहीं पड़ता था, दूधवाला, पड़ोसी, दुकानदार क्या उच्चारण करते थे हमारी समझ के बाहर था, कुछ दुकानदार कुछ-कुछ अंग्रेजी शब्दों का तथा गिनतियों का इस्तेमाल करके बात समझ जाते थे, बहुत परेशानियाँ होने लगीं हमारा घर में बंद रहना शुरू हो गया, यहाँ तक कि मकान मालिक का वार्तालाप भी समझ में नहीं आता था, पढ़े-लिखे लोग तो अंग्रेजी भाषा का प्रयोग कर समझा देते थे परंतु माँ अधिक परेशान रहती थीं। भाषा भिन्नता के इस वातावरण में हमें तथा पूरे परिवार को अपने ढालने में बहुत प्रयास करने पड़ रहे हैं। मुझे बहुत अथक प्रयास के बाद कुछ व्यावहारिक शब्दों का ज्ञान होने लग गया, बहिन भी पिताजी के सहयोग से कुछ टूटा-फूटा बोलने एवं समझने लग गये, परन्तु लिखना तो बहुत दूभर था। हमारा विचार था कि पहले मौखिक शब्दावली का ज्ञान होना आवश्यक है, लिखना तो बाद की बात है।

वहाँ के रीति-रिवाज भी उत्तर भारत के रीति-रिवाजों से बिल्कुल भिन्न थे। बड़ी परेशानी होने लगी थी। कभी-कभी तो माँ के पास बैठकर इतने खिन्न हो जाते कि बैंक प्रशासन को कोसने लग जाते थे कि पिताजी को इतनी दूर स्थानान्तरित क्यों कर दिया। परन्तु पिताजी की भी मजबूरी थी एवं प्रमोशन मिला था। ढिलाई बरतना नामुमकिन था। हम किसी उत्सव में भी नहीं जा पाते थे परंतु यहाँ भी भाषाओं को सीखने के लिए हमने प्रयास शुरू कर दिए, 4 महीने के अथक प्रयासों के बाद कुछ-कुछ समझना शुरू हुआ। पिताजी को उस क्षेत्र में लगभग 4 वर्ष रुकना था, आगे की पढ़ाई करने के लिए कालेज में भी भारी उथल-पुथल रहती परंतु हमने हिम्मत नहीं हारी और धीरे-धीरे हम सभी वहाँ के वातावरण में ढलने में सफल हो गये।

4. **मित्र को पत्र**

उषा सदन,
टालस्टाय मार्ग,
कोटद्वार, गढ़वाल,
उत्तर प्रदेश।

30 जून, 200X

प्रिय मित्र दिनेश,

सस्नेह नमस्कार।

आशा है कि तुम सपरिवार कुशल से होंगे। कल ही तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो गई है और तुम्हारा विद्यालय 15 जुलाई तक बंद हो गया है।

मेरी तथा मेरे घर के सभी सदस्यों की बहुत दिनों से यह इच्छा थी कि तुम्हें कुछ दिनों के लिए यहाँ बुलाएँ, परंतु तुम्हारी पढ़ाई का विचार कर ऐसा नहीं कर पाए। अब तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो गई है और विद्यालय बंद हो गया है। अत: अब तुम्हारे यहाँ आने में कोई दिक्कत नहीं है।

कोटद्वार, यद्यपि छोटा-सा नगर है, फिर भी इसकी कई विशेषताएँ हैं। इस छोटे-से नगर में भी अनेक दर्शनीय स्थल हैं। कालिदास के 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' का कण्वाश्रम यहीं है। सिद्ध बाबा के मंदिर पर प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु भक्त आकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। यह यहाँ का मुख्य आकर्षण है। यहाँ से 20-22 किलोमीटर की दूरी पर लैंसडाउन पर्वतीय स्थल अपनी प्राकृतिक सुषमा के लिए प्रसिद्ध है। इस नगरी का चप्पा-चप्पा अपने नैसर्गिक सौंदर्य से पूर्ण है।

अब मेरी ग्रीष्मावकाश की छुट्टियाँ हो गई हैं, मैं भी पढ़ाई-लिखाई से स्वतंत्र हो गया हूँ। जब तुम आ जाओगे तो हम सभी मित्र पर्वतीय स्थलों पर भ्रमण के लिए चलेंगे और यह कार्यक्रम 8-10 दिन का होगा। बड़ा आनंद आयेगा तथा तुम्हारा साथ तो इस खुशी को चौगुना बढ़ा देगा।

प्रिय मित्र मुझे पूरा विश्वास है कि तुम निश्चित ही मेरा यह आमंत्रण स्वीकार कर लोगे। हम सभी तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे। आने से पूर्व अवगत करा देना जिससे मैं तुम्हें लेने स्टेशन पर आ सकूँ। अपने आने की सूचना यथाशीघ्र देना।

तुम्हारा मित्र
अनुराग

अथवा

सेवा में,

खाद्यमंत्री,
उत्तर प्रदेश सरकार
लखनऊ।

विषय—खाद्य पदार्थों में मिलावट।

महोदय,

आपको सूचित करते हुए बड़ा खेद है कि आजकल हमारे शहर आगरा में खाद्य पदार्थों में मिलावट का धंधा बड़े जोरों पर है। लोग घी में मिलावट खूब कर रहे हैं। पुलिस ने अभी-अभी छापा मारकर 600 मिलावटी घी की टिनें पकड़ी हैं। मसालों में मिलावट खूब हो रही है, मिठाई में खोया मिलावट का डाला जाता है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। दूध में मिलावट हो रही है। गाँवों से दूधिया सिथेंटिक दूध लाते हैं जिससे शहर का जनजीवन बीमारियों से घिरता जा रहा है। कोई भी खाद्य पदार्थ मिलावट के अवैध कारोबार से अछूता नहीं बचा है।

इस पत्र के माध्यम से मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूँ कि आप सम्बन्धित विभागीय कर्मचारियों को सचेत करें जिससे वे जगह-जगह छापामार कार्यवाही करें ताकि शहर का जनजीवन विभिन्न बीमारियों से बच सके। अति कृपा होगी।

भवदीय
अमृत लाल वर्मा
शीतला धाम विकास समिति,
आगरा।

5. निर्देशानुसार उत्तर

(i) **मिश्र वाक्य में**—जो घोड़े की सवारी कर रहा था वह मैदान में गिर पड़ा।

(ii) **संयुक्त वाक्य में**—मैं प्लेटफार्म पर खड़ा था और रेलगाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था।

(iii) **साधारण वाक्य में**—मेहनत करने पर भी उसे अनुकूल परिणाम हाथ नहीं लगा।

6. वाच्य परिवर्तन—

(i) **कर्मवाच्य में**—आज की डाक द्वारा यह पत्र भेज दिया जाए।

(ii) **कर्तृवाच्य में**—स्वामीजी ने समाज सुधार के लिए क्या कुछ नहीं किया।

(iii) **भाववाच्य में**—चलो ! अब सोचा जाए।

7. अलंकार परिचय—

(i) मधुर मृदु मंजुल मुख मुसकान—अनुप्रास।

(ii) भानुवंश राकेश कलंक—रूपक।

(iii) तारासीतरनि तामें छाड़ी झिलमिली हौंति—उपमा।

8.

	क्रिया पद	**भेद**
(i)	उठाया	सकर्मक
(ii)	बैठा था	सकर्मक
(घ)	**अव्यय**	**भेद**
(i)	तो	निपात
(ii)	और	समुच्चयबोधक

9. पद परिचय

वह—पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, एकवचन, पुल्लिग, कर्ताकारक, क्रिया का कर्ता।

छत पर—जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, अधिकारवाचक।

OUTSIDE DELHI SET-I **Code No. 4/1/2**

खण्ड 'क'

1. काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर—

(i) काव्यांश का शीर्षक – 'देशप्रेम'।

(ii) कवि ने इस काव्यांश में एक ही प्रश्न को बार-बार दोहराया है क्योंकि कवि भारत देश की भौगोलिक स्थिति, नदी, पर्वत, मैदान, वनों की हरियाली, आध्यात्मिकता, प्राप्त धन सम्पदा का वर्णन करके देशवासियों में देश प्रेम की भावना जाग्रत करना चाहता है।

(iii) दक्षिण में सागर हमारी मातृभूमि के चरणों को धो रहा है तथा उत्तर में हिमालय-पर्वत भारत के मुकुट के रूप में विराजमान है।

(iv) कवि ने निम्नलिखित पंक्तियों के द्वारा स्पष्ट किया है कि भारतीय सभ्यता सबसे प्राचीन है—

'सबसे प्रथम जगत में, जो सभ्य या यशस्वी,
जगदीश का दुलारा, वह देश कौनसा है।
पृथ्वी निवासियों को जिसने प्रथम जगाया।
शिक्षित किया, सुधारा, वह देश कौन सा है।

(v) हमारे देश की सभी नदियों में अमृत धारा रूपी स्वच्छ निर्मल जल बह रहा है, जो निरन्तर भारतभूमि को सींच कर सुनहरी एवं हरी भरी बना रहा है। इसलिए उसे सुधा की धारा कहा गया है।

(vi) हमारी मातृभूमि अनेक प्रकार के अन्न, फल, फूल, मेवा, मसाले, खनिज एवं अनगिनत धनों से परिपूर्ण है। संसार का प्रत्येक खाद्यपदार्थ देश की भूमि में पैदा होता है जिसे कवि ने 'अनंत धन' की संज्ञा दी है।

अथवा

(i) कविता का शीर्षक – 'हमारी मातृभूमि'

(ii) हमारी मातृभूमि के सम्पूर्ण खेत हरी-भरी फसलों से हमेशा परिपूर्ण रहते हैं, गेहूँ और सरसों की बालियां दूधिया दानों से भरी हुई सोने चाँदी के दानों से चमकती हैं। मातृभूमि पर स्थित वन और उपवन फल-फूलों से भरे रहते हैं।

(iii) न्याय और ज्ञान की बात निम्नलिखित पंक्तियों में कही गई है—

'एक हाथ में न्याय पतका
ज्ञानदीप दूसरे हाथ में
जगत रूप बदल दे, हे माँ!
कोटि-कोटि हम आज साथ में।'

(iv) 'कोटि-कोटि हम आज साथ में' का भाव यह है कि मातृभूमि की प्रशंसा के लिए एवं रक्षा के लिए भारतीयों के करोड़ों हाथ साथ हैं। यहाँ एकता की भावना है। द्वेष, ईर्ष्या का नाम नहीं है। करोड़ों हाथ देश के विकास में लगकर निरंतर अपना कर्तव्य कर रहे हैं।

(v) कविता का मूलभाव यह है कि हमारी मातृभूमि वीरो की जननी है। वेदों की वाणी, गीता का सार से भरी हुई है भरे-भरे मैदान एवं वन उपवन हैं। व्यापक खनिज सम्पदा है। सत्य, अहिंसा, न्याय, ज्ञान का भंडार है। मातृभूमि हमें बहुत प्रिया है। हमें उसे शत्-शत् प्रणाम करना चाहिए।

(vi) हमारी मातृभूमि के चरणों को सागर निरन्तर धो रहा है और हिमालय देश के उत्तर में मुकुट के रूप में स्थित होकर देश की रक्षा कर रहा है।

(vii) कविता के गाँधी जी के 'सत्य-अहिंसा' के सिद्धान्तों का उल्लेख हुआ है।

2. गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर—

(i) गद्यांश का शीर्षक – 'कर्मशक्ति की महत्ता'।

(ii) कर्म का संदेश हमें सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, ग्रह-नक्षत्रादि से प्राप्त हो रहा है जो निरंतर गतिशील है।

(iii) नदियाँ अविरल बह रही हैं। पेड़-पौध, पशु-पक्षियों से हमें सक्रियता का संदेश मिल रहा है।

(iv) हमारे प्राचीन ऋषियों ने सौ वर्ष का जीवन कर्म करते हुए जीने की इच्छा प्रकट की थी।

(v) कर्मशक्ति के बल पर चन्द्रगुप्त की भाँति शक्तिशाली साम्राज्यों की स्थापना हुई थी।

(vi) भारत जैसे विशाल जनतन्त्र की स्थापना गाँधी, नेहरू, पटेल की कर्मशक्ति के आधार पर ही हुई।

(vii) अकर्मण्यता के कारण महान साम्राज्य नष्ट हो जाते हैं तथा बड़े-बड़े खजाने खाली हो जाते हैं।

(viii) धर्मग्रन्थ कर्मठ व्यक्तियों के रात दिन के परिश्रम का फल ही है। उन्होंने रात-दिन परिश्रम करके महान पुस्तकों, वेदों, पुराणों तथा उपनिषदों की रचना की, उनकी स्मृति अविस्मरणीय है।

(ix) विज्ञान कर्म का प्रतीक है महान वैज्ञानिकों ने साधना की बलि वेदी पर हर साँस समर्पित कर दी।

(x) **विपरीतार्थक शब्द**

सक्रियता – निष्क्रियता

विशाल – सूक्ष्म

(xi) **पर्यायवाची शब्द**

चन्द्र – सोम, राकेश।

पृथ्वी – वसुन्धरा, अवनि।

खण्ड 'ख'

3. (क) **निबन्ध—पुस्तक मेले में अधूरी खरीदारी**

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में मेलों का विशेष महत्व है। पूरे देश में विभिन्न अवसरों पर मेले लगते हैं। मेले मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्धन के साधन भी हैं। मेले जन-मानस में अपूर्व उल्लास, उमंग तथा मनोरंजन कराते हैं।

इस बार हमारे शहर के कोठी मीना बाजार मैदान में उत्तर भारत एवं दिल्ली के पुस्तक प्रकाशकों तथा व्यवसाईयों ने पुस्तक मेले का आयोजन किया, पूरे शहर के विद्यालयों में पहले से ही प्रचार-प्रसार हो गया। यह मेला जनवरी महीने की 15, 16, 17 तारीखों में लगा था। क्षेत्रीय विद्यालयों के लिए तारीखें नियत थी। मेले का समय सुबह 10 बजे से रात आठ बजे तक रखा गया।

मैं अपने माता-पिता के साथ शाम के समय मेला देखने के लिए गया। इस मेले में धार्मिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पुस्तकों की करीब 150 दुकान सजाई गईं, जो देश को विभिन्न शहरों तथा दिल्ली के पुस्तक प्रकाशकों एवं व्यापारियों की थीं। मैं सभी दुकानों पर पुस्तकें देखने, पढ़ने का आनंद ले रहा था, पहली पंक्ति में 15-20 दुकानें धार्मिक ग्रन्थों की थीं जो देशी तथा विदेशी विद्वानों की लिखित शुद्ध वाणी थीं हिन्दू धर्म, ईसाई, उर्दू तथा सिख सभी लोगों की भारी भीड़ थी। तत्पश्चात् बच्चों से सम्बन्धित कहानियों, कार्टून आदि बाल साहित्य की पुस्तकों की दुकाने थीं मेरे माता-पिता ने मुझे कुछ पुस्तकें खरीदने के लिए उत्साहित किया एवं खरीदवाईं। इसके बाद अंग्रेजी साहित्य की पुस्तकों की दुकान मिली। एक से बढ़कर एक कीमती पुस्तक थी मैंने अंग्रेजी सीखने की पुस्तक खरीद ली। आगे विज्ञान, कैमिस्ट्री, फिजिक्स, बायोलोजी की पुस्तकें थीं साथ ही साथ हिन्दी, संस्कृत, भूगोल, इतिहास की पुस्तकों की दुकानें थीं। एक एटलस मैंने खरीद ली। आगे देखा तो अनेक उपयोगी पुस्तकों की दुकानें सजी थीं। हमारे पास पैसे खत्म हो चुके थे। अनेक प्रकार के सुन्दर-सुन्दर बिजली के चालित खिलौनों की भी दुकानें थीं जो देखदेखकर ललचा रहा था परन्तु मजबूरी थी पैसे खत्म हो चुके थे, हमारी खरीदारी अधूरी ही रह गई मैंने सोचा कि नाम लिख लेता हूँ फिर मेला लगेगा तो यही अवश्य खरीदूँगा। अंत में हम सभी मेले से बाहर आ गये, मेरी मम्मी ने मेरे तथा पापा के साथ आइसक्रीम का आनंद लिया। अधिक मँहगाई के कारण मेरी खरीददारी अधूरी ही रह गई।

(ख) **शिक्षक दिवस पर मेरी भूमिका**

मानव के पूर्ण विकास के लिए केवल पुस्तकीय ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है। इससे छात्र का मन उबने लगता है। ऐसे अवसर पर वह विश्राम चाहता है। छात्रों के इस मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में समय-समय पर अनेक कार्यक्रम कराये जाते हैं।

हमारे विद्यालय में प्रतिवर्ष शिक्षक दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन हमारे पूर्व राष्ट्रपति श्री राधाकृष्ण जी का जन्म हुआ था, वे स्वयं अध्यापक रहे। जब राष्ट्रपति बने तो लोगों ने उनसे जन्मदिन मनाने को कहा एवं उनका जन्मदिन बड़ी

धूमधाम से पूरे देश में मनाया गया। अपने स्वागत समारोह में उन्होंने घोषणा की कि मेरा जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाऐगा। तब से पूरे देश में 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

मैं बारहवीं कॉमर्स का छात्र हूँ। सभी छात्रों एवं अध्यापक ने मुझे इस आयोजन की जिम्मेदारी सौंपी गई। मैंने कालेज के सभी छात्रों से श्रद्धापूर्वक 50-50 रुपये इकट्ठे किये। दो दिन पहले से मैंने अपने 7-8 साथियों के साथ इस आयोजन की रूपरेखा तैयार की। सभी अध्यापकों के लिए एक-एक पेन्ट शर्ट स्वागत के लिए बाजार से पैक कराया। लगभग 100 अध्यापक। अध्यापिकाएँ कालेज में हैं उनके खाने-पीने के लिए भोजन की पूर्ण व्यवस्था गुलाब जामुन तथा ठंडा कैन्टीन से व्यवस्था करने के लिए आर्डर दे दिया तथा माइक तथा टेन्ट वाले को सजाने का हुक्म दे दिया। यह दिवस स्कूल संस्थापक का भी जन्म दिन होता है।

प्रात: 5 बजे सितम्बर को कालेज की स्टेज सजा दी गई संस्थापक श्री पी. एल. शर्मा जी की मूर्ति तथा सर्वपल्ली राधाकृष्णनन् जी का बड़ा फोटो लगाया गया। सर्वप्रथम वरिष्ठ अध्यापक जी से दीप प्रज्वलन कराया एवं माल्यार्पण कराया फिर सभी गुरूजनों का स्वागत किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्वागतगान एवं कुछ फिल्मी समारोह के साथ एक-एक पैकेट सभी गुरूजनों को भेंट की गई। कार्यक्रम के बाद सभी को खाना खिलाया गया एवं ठंडा पिलवाया। सभी छात्रों ने बढ़-चढ़ कर इस कार्यक्रम में भाग लिया एवं अपने कक्षा अध्यापक को विशेष स्वागत के साथ अतिरिक्त उपहार भी दिये। सभी छात्र-छात्राओं ने मेरा भरपूर सहयोग किया जिससे मेरा आत्मबल बहुत बढ़ गया, मैं चाहता हूँ कि ऐसा दिन मेरे जीवन में बार-बार आए। जिससे मैं गुरूजनों का स्वागत करता रहूँ।

(ग) **दुर्लभ होता है अच्छा मित्र**

मित्रता एक पवित्र वस्तु है। संसार में सबकुछ मिल सकता है, परन्तु सच्चा और स्वार्थहीन मित्र मिलना अत्यन्त दुर्लभ है, जिस व्यक्ति को संसार में मित्र रत्न मिल गया, समझो उसने अपने जीवन में एक बहुत ही बड़ी निधि पाली। मनुष्य जब संसार में जीवन यात्रा प्रारम्भ करता है तो उसे सबसे बड़ी कठिनाई मित्र खोजने में होती है।

एक सच्चा मित्र संसार में सबसे बड़ा आश्रय होता हैं वह विपत्ति में हमारी रक्षा करता है, निराशा में उत्साह देता है, जीवन को पवित्र बनाने वाला, दोषों को दूर करने वाला और माता के समान प्यार करने वाला होता है।

भर्तृहरि ने मित्र के गुणों का वर्णन करते हुए कहा है कि—

पापान्निवारियति योज्यते हिताय,
गुहयं च निगूहति गुणन् प्रकटीकरोति।
आपदं गतं च जहाति ददाति काले,
सन्मित्र लक्षणमिदं प्रवदन्ति संत:।।

विपत्ति के समय ही मित्रता की वास्तविक पहचान होती है। संसार में सुख के साथ तो अनेक तथाकथित मित्र मिल जाते हैं, परन्तु विषम परिस्थिति में कभी सहयोग नहीं देते। जो मुसीबत में साथ देता है वही सच्चा मित्र होता है। महाकवि तुलसीदास ने भी आदर्शमित्र के लक्षण बताते हुए लिखा है—

जेन मित्र दुख: होई दुखादी। तिनहिं विलोकत पातक भारी।।
निजदुख गिरिसम रजकरिजाना। मित्र के दुख रज मेरू समाना।।
देतलेत मन संक न धरहीं। बल अनुमान सदा हित करहीं।।

कर्ण और दुर्योधन की मित्रता पक्की थी। कृष्ण के भारी प्रलोभन के बाद भी कर्ण ने दुर्योधन का साथ नहीं छोड़ा, श्री कृष्ण से कहा—

मित्रता बड़ा अनमोल रतन।
कवि इसे तोल सकता है धन।।
सुरपति की तो है क्या विसात।
मिल जाए अगर बैकुण्ठ हाथ।।
कुरूपति के चरणों में धर दूँ।
दुर्योधन को अर्पित कर दूँ।

जो लोग आपत्ति में अपने मित्रों से मुँह मोड़ लेते हैं, वे मित्र कहलाने के योग्य हीं हैं। ऐसे लोग स्वार्थी होते हैं। स्वार्थ पूरा होते ही वे बात भी नहीं करते।

4. **बैंक प्रबन्धक को पत्र-चैक बुक खोने की सूचना**

सेवा में,

प्रबन्धक,

पंजाब नेशनल बैंक,

बरहन (आगरा)

विषय : **चैक बुक खोने की सूचना।**

महोदय,

निवेदन है कि प्रार्थी का बचतखाता संख्या 6918 आपकी शाखा में है। जिसमें (लगभग 67,000/- रु. जमा हैं। मैंने कुछ दिन पहले आपकी बैंक से एक चैकबुक 20 चैकों की ली थी, जिसमें से अभी तक केवल 2 चैक ही निर्गत हुए हैं। अभी 18 चैक मौजूद हैं। कल शाम को मेरा बैग बरहन से आँवलखेड़ा आते समय कहीं गाड़ी से गिर गया है जिसमें कुछ कागजातों के साथ चैकबुक भी थी, काफी प्रयास के बाद भी नहीं मिली। अतः आपसे निवेदन है कि आप उस चैकबुक के किसी भी चैक का मेरे बचत से भुगतान नहीं करें, जो अवैद्य होगा।

अतः सूचनार्थ एवं निवेदन हेतु पत्र आपकी शाखा में प्रस्तुत है।

आशा है आप भुगतान नहीं करेंगे।

भवदीय

सुनील झा, पंचायत अधिकारी

दि0 10/4/09 बरहन (आगरा)

अथवा

सम्पादक को पत्र

सेवा में,

सम्पादक,

दैनिक जागरण,

आगरा।

विषय—पाठ्यपुस्तकों की कमी की ओर ध्यानकर्षण हेतु।

महोदय,

मैं आपके इस प्रतिष्ठित पत्र का नियमित पाठक हूँ। कृपया मेरी समस्या पर ध्यानाकर्षित करते हुए छापने का कष्ट करें।

आजकल सारे विद्यालय खुल चुके हैं। विद्यालयों द्वारा छात्रों को अधूरे पुस्तकों के बैग दिये जा रहे हैं। बहुत सी पुस्तकों के स्कूल की लिस्ट में नाम है परन्तु वे उपलब्ध नहीं हैं। बाजार में भी उपलब्ध नहीं हैं। अधूरा बैग होने के कारण बच्चों की सभी विषयों की पढ़ाई असम्भव है। अतः आपसे निवेदन है कि आप हमारी तथा छात्रों की परेशानी को देखते हुए अपने समाचार पत्र के द्वारा अधिकारियों तथा प्रकाशकों का ध्यान आकर्षित करें।

भवदीय

दि0 12/4/2008 **रजनीश जैन**

अभिभावक

खण्ड 'ग'

5. **(क) दो या दो से अधिक वर्षों के मेल को शब्द कहते हैं? जब कोई शब्द किसी वाक्य में प्रयुक्त होकर कोई विशिष्ट अर्थ देता है तो उसे पद कहते हैं।**

   (ख) गंगा-यमुना वाला—विशेषण पद बन्ध।

   (ग) संसार में—व्यक्ति वाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग अधिकरण कारक,

6. **(क) निर्देशानुसार उत्तर—**

   (i) संयुक्त वाक्य—वह मुझसे मिला और चला गया।

   (ii) जब वह स्टेशन पहुँच गया, तब उसने टेलीफोन कर दिया।

   (ख) रचना के अनुसार वाक्य भेद—

   (i) कहानी पूरी हो गई और मैं सोता ही रहा— संयुक्त वाक्य।

   (ii) मैं जानता हूँ कि तुम मना नहीं करोगे— मिश्रवाक्य।

7. **निर्देशानुसार उत्तर—**

   (क) सन्धि विच्छेद—महा+आशय, नर + इन्द्र।

   (ख) संधि कीजिए—कार्यालय, प्रत्युत्तर।

   (ग) समासविग्रह—पेट भरके, मान और अपमान।

   (घ) पीतांबर—पीला है जो अम्बर (वस्त्र)—कर्मधारय समास।

   शिवालय— शिव का आलय—तत्पुरुष समास।

8. **(क) मुहावरे एवं प्रयोग**

   (i) हवा से बातें करना (बहुत तेज दौड़ना)

   प्रयोग—आजकल नई-नई गाड़िया हवा से बातें करती हैं।

   (ii) ऊँगली उठाना (बुराई करना)

   प्रयोग—रामकुमारी ने अपने पिता से शिकायत पर ससुरालीयों पर ऊँगली उठा दी।

   (iii) निन्यानवें का फेर (धन दौलत के चक्कर में पड़ना)

   प्रयोग—अशोक पहले आता रहता था परन्तु जब से निन्यानवे के फेर में पड़ा है सब भूल गया है।

   (iv) हाथ का मैल (मेहनत की कमाई)

   प्रयोग—दुनिया में मकान, दुकान, धन दौलत संग्रह सभी हाथ का मैल है।

   (ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति मुहावरे या लोकोक्ति द्वारा—

   (i) आलसी के **घोड़े पर सवार** हुए बिना काम नहीं होगा।

   (ii) उस गाँव में पढ़े-लिखे लोग तो हैं वहीं, इसलिए राजीव से ही सब सलाह-मशवरा करते हैं, वह **अंधों में काने राजा** है।

9. **शुद्ध वाक्य—**

   (क) आज पूरे शहर में आतंक फैला है।

   (ख) नाव के डूबते समय केवट पानी में कूद पड़ा।

   (ग) मुझे आज विद्यालय नहीं जाना है।

   (घ) एक कप गर्म चाय ले आओ।

10. गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर—

(क) फिल्मकार प्राय: अपनी फिल्मों में उथली चीजें इसलिए देते हैं जिससे उस विषय पर कलाकार दर्शकों को अधिक से अधिक आकर्षित कर सके। कलाकार बेहतरीन एक्टिंग करके सबको चमत्कृत कर देता है उसी के बदौलत फिल्म शौहरत प्राप्त करती हैं।

(ख) कलाकार को उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करना चाहिए। फिल्म में कोई दुख भरा दृश्य हो तो उसे महिमा मंडित करना चाहिए, अच्छा संगीत हो तथा उसी के अनुरूप एक्टिंग हो तभी उपभोक्ता अधिक आकर्षित होगा और फिल्म की प्रसंशा करेगा तो फिल्म लोकप्रिय होगी।

(ग) 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंगलिशस्तानी' ये गीत शैलेन्द्र ही लिख सकते थे क्योंकि उनमें गम्भीरता थी, वे भाव प्रवण थे क्योंकि वे श्रोताओं पर उथलेपन को नहीं थोपाना चाहते थे वे दबाव में काम नहीं कर सकते थे। स्वतन्त्र विचारों वाले थे।

(घ) शैलेन्द्र अपनी फिल्मों के द्वारा अभावों में जीवन जीने वालों की सरलता एवं प्रेम की जुबान प्रकट करना चाहते थे। वे चाहते थे कि उनकी फिल्में शान्त नदी के प्रवाह, हवा, समुद्र जैसी गहराई से परिपूर्ण हो।

अथवा

(क) 'दुनिया कैसे बाहर में आई' इस प्रश्न के उत्तर में वैज्ञानिकों का विचार है कि दुनिया के बसाने में प्राकृतिक आपदाऐं, भूकम्प, ज्वालामुखी एवं वायुमण्डल का विशेष योगदान है। जबकि धर्मग्रन्थ कहते हैं कि इस दुनिया की रचना ब्रह्मा ने की है। उसी ने इस दुनिया को बसाया है वह इस संसार का निर्माता है।

(ख) 'धरती किसी एक की नहीं है'। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समुद्र आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदार है। परन्तु मनुष्य ने अपनी बुद्धि से बड़े-बड़े महल, बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था परन्तु आपसी मनमुटाव के कारण अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो गया है।

(ग) बढ़ती हुई आबादी के कारण पर्यावरण पर बुरा असर पड़ा है जो हमारे सामने प्रदूषण की समस्या के रूप में दिखाई दे रहा है। बढ़ती के बटने से आवास के लिए भूमि का विनाश हुआ जिससे प्रकृति का असंतुलन हो गया। समुद्र ने पीछे सरकाना शुरू कर दिया, जंगल कटते गये। पशु-पक्षियों ने बस्तियों से भागना शुरू कर दिया। गरमी में अधिक गर्मी, बेवक्त की बरसातें, तूफान, बाढ़, भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाऐं और नई-नई बीमारियों का जन्म हुआ है। पदार्थों की गुणवत्ता घटने लगी है।

11. काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर—

(क) कवि—रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

कविता—आत्मत्राण।

(ख) कवि के अनुसार दुख के समय सारे लोग उसे हीनभाव से देखेंगे, मददगार कोई हीं होगा। लोग धोखा देंगे तथा हँसी उढ़ायेंगे, बल तथा पौरुष को अस्थिर करेंगे।

(ग) 'तब मुख पहचानूँ छिन-छिन' से कवि का अभिप्राय है कि हे ईश्वर सुख के दिनों में भी मैं पलपल को पहचान कर उनका उपभोग कर सकूँ। दुख और रात्रि में प्रार्थना करे मैं उनका दिन के समान सामना कर सकूँ।

(घ) कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि जिस प्रकार दुख भरी रात्रि दिन की प्रतीक्षा में बीत जाती है उस दिन ऐसी करुणामय कृपा बनाए रखना । हे ईश्वर कभी भी मेरे मन में आपके प्रति कोई संदेह पैदा न हो। ऐसी कृपा बनाए रखो।

अथवा

(क) कवियत्री— महादेवी वर्मा

कविता—'मधुर मधुर मेरे दीपक जल'।

(ख) कवियत्री कल्पना करती है कि दीपक प्रकाश रूपी ज्ञान का प्रतीक है। दीपक से यह आग्रह किया जा रहा है कि वह जलकर प्रकाश फैलाए जिससे सम्पूर्ण पृथ्वी से अंधकार रूपी अज्ञानता दूर होगी और आने वाले पथिक को रास्ता दिखाई देगा, उसके जीवन में ज्ञान का प्रसार होगा।

(ग) कवियत्री ने दीपक से प्रियतम के लिए प्रकाश फैलाने, सुगन्ध फैलाने, विपुल धूप बनने, मृदुल मोम की तरह शरीर घुलाने आदि करने का आग्रह किया है।

(घ) 'मृदुल मोमसा घुल रे मृदुलन' का भाव है कि जिस प्रकार कोमल मोम स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है वैसे ही हे मनुष्य कभी दीपक के समान स्वयं को जलाकर दूसरों को प्रकाश प्रदान कर।

12. (क) मीराबाई श्रीकृष्ण से बड़े ही विनम्र शब्दों में अपनी पीड़ा हरने के लिए प्रार्थना करती हुई कहती है कि, हे प्रभु! आप हमारी पीड़ा दूर करो। जिस प्रकार आपने द्रोपदी की लाज चीर बढ़ाकर की थी, भक्त प्रहलाद की रक्षा नृसिंह रूप धारण करके की थी, डूबते हुए हाथी की रक्षा मगरमच्छ को मारकर कुँजर की रक्षा की थी, उसी प्रकार आप हमारी रक्षा करें।

(ख) 'मनुष्यता' कविता में कवि ने उदार व्यक्ति की पहचान उसके कार्यों से स्पष्ट की है। जो मनुष्य दूसरों के प्रति दया भाव, सहानुभूति, परोपकार की भावना, करुणा भाव, समानता, दानशील, विवेकशीलता, धैर्य, सहास, गुणों से परिपूर्ण होता है वह व्यक्ति उदार कहलाता है। ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा समाज के लोगों द्वारा की जाती है तथा जो यश कीर्ति द्वारा समाज में आदर पाता है।

(ग) 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में बताया गया है कि जब पहाड़ों पर वर्षा ऋतु में बादल बरसते हैं तब पर्वतों से प्रवाहित होने वाले झरने पर्वतों का गौरवगान करते हुए पृथ्वी पर झरझर गिरते हैं और नसनस में उत्तेजना भर देते हैं। झरते हुए झरने झाग भरे हुए होते हैं। बेमोती की माला जैसे लड़ियों की तरह सुन्दर दिखाई देते हैं और ऐसा लगता है कि पहाड़ों से चाँदी का भंडार सफेद धातु के रूप में गिर रहा है। पहाड़ों के हृदय से उठकर ऊँचे आकांक्षाओं वाले वृक्ष आकाश की ओर शांत भाव से टकटकी लगाकर देख रहे हैं। इस प्रकार झरने पहाड़ों की शोभा को बढ़ाते हैं।

(घ) 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया' इस पंक्ति में बताया गया है कि हिमालय पर्वत हमारा सुरक्षा प्रहरी है तथा स्वाभिमान, गर्व और भारतवर्ष की शान का प्रतीक है। कवि का आग्रह है कि हमारा सिर कट जाय परन्तु हम देश के मुकुट 'हिमालय' का सिर झुकने नहीं देगें। हम बलिदान के लिए तैयार हैं और अपने साथियों एवं भावी पीढ़ी पर गर्व है कि वे हमारे बाद देश की रक्षा एवं स्वाभिमान की सुरक्षा करते रहेंगे।

13. (क) बिहारी ने अपने दोहों में ग्रीष्म ऋतु, जेठ मास की दोहपरी की भीषण गर्मी का वर्णन किया है। सूर्य की किरणें इतनी प्रचंड हो रही हैं कि गर्मी से बचने के लिए वन के अंदर वृक्षों की घनी छाया भी छाया चाहती है ऐसा लग रहा है कि प्रकृति भी भीषण गर्मी से बचने के लिए घने वन में प्रवेश कर रही है। कहीं भी छाया नहीं दिखाई दे रही है। इस दृश्य को देखकर कवि बिहारी कल्पना कर रहे हैं कि गर्मी से परेशान होकर छाया भी घने वन में जाकर विश्राम करना चाहती है।

(ख) एक पुरानी तोप कम्पनी बाग के प्रवेश द्वारा पर रखी गई है जो सन् 1857 की तोप है। इस तोप की देखभाल, सँभाल कर की जाती है। जिस प्रकार यह कम्पनी बाग ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा हमें विरासत में मिला है। वैसे ही यह तोप हमें विरासत में अंग्रेजों द्वारा दी गई है। यह वर्ष में दो बार चमकायी जाती है। अर्थात् इसका प्रयोग दो बार ही किया जाता है। विरासत में मिली चीजों की सुरक्षा बड़ी सँभाल कर इसलिए होती है क्योंकि वह हमें अपने पूर्वजों से प्राप्त होती है। उनका अपना महत्व और इतिहास होता है।

14. (क) येल्दीरीन ने ख्यूक्रिन को दोषी ठहराते हुए कहा, "मुझे लगता है इसने अपनी जलती सिगरेट से कुत्ते की नाक योंही जला डाली होगी, हुजूर। वरना यह कुत्ता बेवकूफ है क्या जो इसे काट खाता। मैं इस जैसे शैतान लोगों को अच्छी तरह समझता हूँ।"

(ख) समुद्र के गुस्से की वजह थी कि बड़े-बड़े बिल्डर समुद्र को पीछे धकेलकर उसकी जमीन हथिया रह थे। बेचारा समुद्र लगातार सिमटता जा रहा था। पहले उसने सहन किया। जब उसकी जगह कम पड़ी तो उसे गुस्सा आ गया। उसने एक रात अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाजों को उठकर बच्चों की गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया। इस तरह समुद्र ने अपना गुस्सा निकाला।

(ग) एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही पूरा करने की कोशिश जापानी लोग करने लगे हैं। इसलिए लेखक ने 'पतझर की टूटी पत्तियाँ पाठ में जापानियों के दिगाम में 'स्पीड' का इंजन लगाने की बात कही है।

(घ) बज़ीर अली एक जाँबाज सिपाही था। उसने अंग्रेजों की ब्रिटिश कम्पनी की सैनिक छावनी में निडरतापूर्वक प्रवेश किया और कर्नल से कारतूस प्राप्त किए। वह एक बलशाली, साहसी नौजवान था। उसने एक जाँबाज सिपाही की तरह अपने प्राणों की बाजी लगाकर कारतूस हासिल किए। उसके जाने के बाद कर्नल भी हक्का-बक्का रह गया और उसकी हिम्मत और बहादुरी से अचंभित रह गया जो उसकी जान बक्श कर चला गया।

15. (क) जुलूस के लाल बाजार आने पर लोगों की यह दशा हुई कि वन्दे मातरम् के नारे लगा रहे थे। लोगों की भीड़ बढ़ती ही जा रही थी। पुलिस उन्हें रोकने का प्रयास करने के लिए लाठी चलायी जिससे लोग घायल हो जाते थे। लोगों को पकड़कर कुछ दूर पुलिस ले जाती और फिर छोड़ देती थी। इसमें 105 स्त्रियाँ पकड़ी गयीं थीं। ब्रिटिश सरकार के बनाए कानून को तोड़ने के अपराध से युवाओं, पुरुषों और स्त्रियों को पुलिस के कोप का भाजन बनना पड़ा था। महिलाओं को जेल भी जाना पड़ा था। इस दिन बहुत अधिक लोग लगभग 200 कार्यकर्ता घायल हुए थे और बंदी बनाए गए थे।

(ख) 'अब कहाँ दूसरे के दुख में दुखी होने वाले' पाठ में बताया गया है कि अब जीवन छोटे-छोटे घरों में सिकुड़ने लगा है। पहले की तरह परिवार के सदस्य मिलकर नहीं रह सकते। एकल परिवार की प्रथा चल गई है। स्त्रियों को सास-ससुर, ननद और देवर का दखल अच्छा नहीं लगता । वे अलग रहने चले जाते हैं। इसलिए अब छोटे-छोटे घर बन गये हैं या प्लैट सिस्टम हो गया है जहाँ पड़ौसी-पड़ौसी को नई जानता न कोई मतलब रखता है। प्रेम भावना खत्म हो चुकी है। अब न कोई किसी के दुख में, न सुख में सम्मिलित होता है। शहरी जीवन नीरस हो गया है द्वेष भावनाएं अधिक बढ़ गईं हैं।

16. (क) ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा भाव है। जब लेखक का गाँव बसा भी नहीं था तभी यहाँ एक संत आकर बस गए थे। वह संत अपनी झोपड़ी में रहकर दिन-रात ठाकुर जी की पूजा-अर्चना करते थे। बाद में गाँव के लोगों ने चंदा उगाह कर उनकी कुटिया के स्थान पर एक छोटा-सा मंदिर बना दिया था। ज्यों-ज्यों गाँव की आबादी बढ़ी, मंदिर का भी विस्तार होता गया। बहुत अधिक संख्या में लोग मनौती मनाने, पुत्र प्राप्ति, मुकदमों में विजय पाने, लड़की की शादी, लड़के की नौकरी की कामना से वहाँ आने लगे। सफलता मिलने पर ठाकुर जी पर रुपये, जेवर, अनाज चढ़ाते थे। अधिक खुशी मिलने पर ठाकुर जी के नाम खेत-जमीन कर देते थे। इस तरह गाँव वालों की ठाकुर जी के प्रति अंध श्रद्धा थी। धीरे-धीरे इस धार्मिक समिति में ऐसे लोग भी सम्मिलित हो गए जो स्वार्थवश धर्म की आड़ में हिंसक हो उठते थे। इस तरह इस कहानी में स्वार्थ लिप्सा और धर्म की आड़ में ग्रामीणों की हिंसात्मक मनोवृत्ति उजागर होती है।

(ख) गुरदयाल सिंह जी ने अपनी आत्मकथा 'सपनों के से दिन' में पीटी साहब की कुछ चारित्रिक विशेषताओं को उजागर करते हुए लिखा है कि पीटी मास्टर साहब बड़े ही कठोर प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। अनुशासन भंग करने वाले छात्रों को वे कठोर दण्ड देते थे। छात्रों को घुड़की देना, ठुड्डे मारना, उन पर बाघ की तरह झपटना, खाल-खींचना आदि सजाऐं देना उनके लिए सहज था। वे ऐसा कभी पसंद नहीं करते थे कि कोई भी बच्चा लाईन तोड़े या थोड़ा दाएँ-बाएँ अथवा टेड़ा खड़ा हो।

पीटी साहब को जब कभी फारसी, पढ़ानी होती तो वे बच्चों को सम्बद्ध विषय समझो की बजाए डंडे से काम करते थे। वे चाहते कि बच्चे उनके भय से पाठ याद कर लें। ऐसे व्यवहार से उनकी अयोग्यता उभरती है।

पीटी साहब यद्यपि सिद्धांतवादी थे परन्तु बच्चों को डाँट-डपट कर रखने वाली उनकी सोच गलत थी। बच्चों को भरी दुपहरी में मुर्गा बनाने वाली उनकी सोच गलत थी। बच्चों को भरी दोपहरी में मुर्गा बना देना उन्हें अनुचित नहीं लगता था। हैड मास्टर द्वारा मुअत्तल कर देने पर वे कभी उनके सामने गिड़गिडाए नहीं। इससे उनका स्वाभिमानी होना उजागर होता है। पीटी साहब तोतों से तो प्रेम करते हैं, लेकिन बच्चों से नहीं। इससे उनके सनकी होने का पता चलता है।

17. (क) गाँव में किसी भी पर्व की शुरूआत ठाकुरबारी से ही होती है। होली पर सबसे हले गुलाल ठाकुर जी को ही चढ़ाया जाता है। दीवाली का पहला दीया ठाकुरबारी में ही जलता है। जन्म, शादी तथा जनेऊ के अवसर पर अन्न, वस्त्र की सबसे पहली भेंट ठाकुरजी के नाम की जाती है। ठाकुरबारी के साधु-संत व्रत-कथाओं के दिन घर-घर घूमकर कथावाचन करते हैं। जब लोगों के खलिहान में फसल की दवनी होकर अन्न की 'ढेरी' तैयार हो जाती है, तब ठाकुरजी के नाम 'अगडम' निकालने के बाद ही लोग अनाज अपने घर ले जाते हैं। क्योंकि ठाकुरजी के मन्दिर के प्रति लोगों की विशेष श्रद्धा और विश्वास है।

(ख) टोपी ने एक बार जब डायनिंग टेबल पर बैठकर 'अम्मी' शब्द प्रयोग किया तो घर में बवंडर पैदा हो गया। घर का हर कोई सदस्य उसके इस भाषा-प्रयोग पर आपत्ति करने लगा। सुभद्रा देवी यानी टोपी की दादी ने टोपी की माँ रामदुलारी को टोपी की भाषा सुधारने पर बल देते हुए उसे सबक सिखाने की हिदायत दी। सुभद्रा देवी की बातों से आहत रामदुलारी ने टोपी को इतना पीटा कि टोपी का अंग-अंग दुखने लगा। उसे मुन्नी बाबू से घृणा हो गई, और इफ्फन के मिलने पर दादी बदलने की बात मन में आई परन्तु यह संभव नहीं था, उसे अपनी दादी से बहुत घृणा हो गई।

(ग) स्कूल की पिटाई का डर भुलाने के लिए लेखक सोच करता था कि जब स्काटरिंग के अभ्यास के दौरान नीली-पीली झांड़ियाँ, गले में दोरंगे रुमाल कैसे अच्छे लगते थे ऐसा लगता था कि फौज के सिपाही हैं कभी-कभी पढ़ाई से पीटी साहब का डिसीप्लिन में प्राप्त गुडविल आज भी काम आ रही है। जब से शाबाश कहते थे कैसा अच्छा लगता था, चमत्कार सा लगता था हैडमास्टर जी बिल्कुल सीधे साधे विपरीत स्वभाव के थे। साथियों के साथ मस्ती मारना कैसी सुहावना लगता था। अब सोचना ही रह गया है। अनुशासन जी को नियमित बनाता है। अब सब कुछ अच्छा लगता है।

(घ) इफ्फन को अपनी दादी से विशेष प्यार था। उसकी दादी उसे रोज नई-नई कहानी सुनाती थीं। दादी भी इफ्फन से भरपूर प्रेम करती थी। दोनों एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे। लेखक दोनों के प्रेम सम्बन्धों को कांग्रेस और जनसंघ से भी बड़ा मानता है। इफ्फन-दादी दोनों एक-दूसरे से मिलकर अपने-अपने मन की प्यास बुझा लेते थे। दोनों जब मिलते तो दोनों का अकेलापन मिट जाता था। दादी जहाँ बहत्तर साल की थीं तो इफ्फन आठ साल का। जितना अधिक अपनेपन का भाव इ फ्फन को अपनी दादी से मिलता था उतना परिवार के किसी अन्य सदस्य से नहीं। बस एक दादी ही थीं, जिसने कभी इफ्फन का दिल नहीं दुखाया।

खण्ड 'ख'

5. (क) दो या दो से अधिक से वर्षों का स्वतन्त्र समूह जिसका कोई अर्थ हो शब्द कहलाता है परन्तु जब कोई शब्द वाक्य में प्रयुक्त होकर कोई विशिष्ट अर्थ देता है तो उसे पद कहते हैं। जैसे– हिमालय देश के उत्तर में है।

स्वर में पावक आदि नहीं वृक्षा वंदन है (पावक-तेज)

(ख) **पदपरिचय–**

मेरे–सार्वजनिक विशेषण,एकवचन, पुल्लिंग, गाँव विशेष्य।

विद्वान–जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक, रहते हैं क्रिया का कर्ता।

(ग) **बहुत जोर से**–क्रिया विशेषण पदबन्ध।

6. (क) **वाक्य भेद (रचना के आधार पर)**

(i) तुम वहाँ जा सकते हो जहाँ वह रहता है–मिश्रवाक्य।

(ii) उसने अपना काम कर लिया और घर चला गया–संयुक्त वाक्य।

(ख) **निर्देशानुसार रुपान्तरण–**

(i) संयुक्त वाक्य में –वे वहाँ से चले गये और भाषण देने लगे।

(ii) मिश्रवाक्य में – मेरा भाई जो विदेश में रहता है अब यहाँ नहीं आएगा।

7. **निर्देशानुसार उत्तर–**

(क) **सन्धि-विच्छेद**–सह+उदर, तथा +एव।

(ख) **सन्धि**–महानन्द, सूर्योदय।

(ग) **समासविग्रह**–वर्ष-वर्ष, धन के बिना।

(घ) **समास का नाम**–भाई और बहन–द्वन्द्व समास।

छः महीनों का समाहार–द्विगुसमास।

8. (क) **मुहावरे एवं लोकोक्तियों का प्रयोग**

(i) **तूती बोलना (बहुत प्रभाव होना)**

प्रयोग–स्वामी विवेकानन्द के जबरदस्त भाषण के बाद यूरोप में उनकी तूती बोल उठी।

(ii) **मान न मान मैं तेरा मेहमान (जबरदस्ती सिर पड़ना)**

प्रयोग – एक अध्यापक ने छात्र को ट्यूशन पढ़ाने के लिए मना कर दिया परन्तु अपने अभिभावक को लाकर वह पीछे पड़ गया और प्रलोभन देने लगा यह तो मान न मान मैं तेरा मेहमान वाली बात हो गई।

(iii) **चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात (सुख अस्थिर रहता है)**

प्रयोग–नई दुल्हन जब घर आई तो अपनी सुन्दरता और चमक-दमक में किसी को कुछ नहीं समझती थी लोगों ने समझाया कि चार दिन की चाँदनी होती है फिर अँधेरी रात होती है। इसलिए सोच-समझकर रहो।

(iv) **आग में घी डालना (क्रोध को बढ़ाना)**

प्रयोग–पिता पहले से ही नाराज थे परन्तु लड़के की शिकायत ने आग में घी डाल दिया।

(ख) **रिक्त पूर्ति लोकोक्ति एवं मुहावरे से–**

(i) आजकल ऐसे आश्चर्यजनक समाचार सुनने को मिलते हैं कि **दाँतों तले अँगुली दबाकर** रह जाना पड़ता है।

(ii) भाई की दुर्घटना का समाचार सुनकर उसके चेहरे पर **झाईयाँ मारने** लगी।

9. **शुद्ध वाक्य–**

(क) हमारा लक्ष्य ज्ञान प्राप्ति होना चाहिए।

(ख) कमरे में पिताजी और माताजी बैठे हैं।

(ग) उस बगीचे में सुगन्धित फूल हैं।

(घ) ऐसे सज्जन व्यक्ति कहाँ मिलेंगे ?

16. (क) गाँव के लोगों ने चंदा इकट्ठा करके ठाकुरवादी का बड़ा मन्दिर बनवा दिया। गाँव के स्त्री-पुरुष सबह शाम मन्दिर में पूजा करते तथा चढ़ावा भी चढ़ाते थे। उनके मन में ठाकुरवादी के प्रति अपार श्रद्धा थी। वे मनौती माँगते तथा सफलता मिलने पर, वे खुशी में ठाकुरजी पर रुपये, प्रसाद, जेवर, अनाज चढ़ाते। ज्यादा खुशी होने पर ठाकुरजी के नाम अपने खेत का टुकड़ा ही लिख देते थे। ठाकुर वादी से अब तक 20 बीघा खेत लग चुका था। सुबह शाम भजन कीर्तन करते थे। गाँव में किसी भी पर्व की शुरूआत ठाकुरवादी से ही करते थे। होली पर गुलाल सबसे पहले ठाकुरजी को ही लगाते थे। दीवाली का पहला दिया ठाकुरवादी में ही जलाते थे। जन्म, शादी तथा जनेऊ के अवसर पर अन्न-वस्त्र की सबसे पहली भेंट ठाकुरजी के नाम की जाती थी। लोग खेती-बाड़ी से अपना बचा हुआ समय ठाकुरवादी में ही बिताते थे। साधु-संतों के प्रवचन सुनकर ठाकुरजी का दर्शन कर अपना जीवन सार्थक मानते थे। उसका विश्वास था कि ठाकुरजी के दर्शन से पिछले पाप सारे धुल जायेंगे। इस प्रकार ठाकुरवादी का काम लोगों के भीतर ठाकुरजी के प्रति भक्ति-भावना पैदा करना और धर्म से विमुख हो रहे लोगों को सही रास्ते पर लाना था।

(ख) एक दिन शहर से उनके भतीजे का एक दोस्त गाँव आया था। उसी के आगमन की खुशी में दो-तीन तरह की सब्जी, बजके, रायता, चटनी आदि बने थे। बीमारी से उठे काका का मन स्वादिष्ट भोजन के लिए बड़ा बेचैन था। मन ही मन सोच रहे थे उनको अच्छी चीजें खाने को मिलने वाली थीं। किन्तु बातें बिल्कुल विपरीत हुईं। सभी ने खाना खा लिया। उनको कोई पूछने तक नहीं आया। काका के तीनों भाई खाना खाकर खलिहान में चले गए। अंत में हरिहर काका ने स्वयं दालान वाले कमरे से निकल हवेली में प्रवेश किया। तब उनके छोटे भाई की पत्नी ने कुछ रूखा-सूखा खाना लाकर उनके सामने रख दिया—भात, मट्ठा और अचार। बस, हरिहर काका के बदन में तो मानों आग लग गई। उन्होंने थाली उठाकर बीच आँगन में पटक दी। हरिहर काका गरजते हुए हवेली से दालान की तरफ चल पड़े—"यह समझ रही हो कि मुफ्त में खिलाती हो। मेरे हिस्से के खेत की सारी पैदावार इसी घर में आती है। मैं अनाथ और बेसहारा भी नहीं हूँ।"

(ग) एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने के कारण टोपी को अनेक प्रकार से भावात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। एक, उसके साथ पढ़ने वाले उसके सभी साथी आगे निकल गए। इस कारण उसकी किसी से भी दोस्ती नहीं हो पाई। दूसरे, उसकी कक्षा के मास्टर भी उसके फेल हो जाने पर उसका उपहास उड़ाते थे। कक्षा में मास्टर उसकी उपेक्षा करने लगे थे। इस कारण टोपी शुक्ला को क्लास में बैठने में अजीब लगता था।

(घ) मास्टर प्रीतम चन्द का व्यक्तित्व और पहनावा भयभीत करने वाला था। मास्टर प्रीतम चन्द जी को स्कूल के समय में कभी भी हमने मुस्कराते या हँसते न देखा था। उनका ठिगना कद, दुबला-पतला किन्तु गठीला शरीर, माता के दागों से भरा चेहरा, तथा बाज-सी तेज आँखे, खाकी वर्दी, चमड़े के चौड़े पंजों वाले बूट-सभी कुछ ही भयभीत करने वाला हुआ करता था। उनके बूटों की ऊँची एड़ियों के नीचे वैसे ही खुरियाँ लगी रहतीं, जैसे ताँगे के घोड़े के पैरों में लगी रहती है। अगले हिस्से में, पंजों के नीचे मोटे सिरों वाली कील ठुकी होती। यदि वे किसी सख्त जगह पर भी चलते तो खुरियों और कीलों के निशान वहाँ भी दिखाई देते।

17. (क) हमारे स्कूल का आकार बहुत छोटा था—केवल छोटे-छोटे नौ कमरे थे जो अंग्रेजी के अक्षर एच (H) की भाँति बने थे। दाईं ओर का पहला कमरा हैडमास्टर श्री मदनमोहन शर्मा जी का था जिसके दरवाजे के आगे हमेशा चिट लटकी रहती। स्कूल की प्रेयर (प्रार्थना) के दौरान वह बाहर आते और सीधी कतारों में कद के अनुसार खड़े लड़कों को देख उनका गोरा चेहरा खिल उठता।

हैडमास्टर शर्मा जी उसके सीधे स्वभाव के थे। वे पाँचवी तथा आठवीं श्रेणी को अंग्रेजी स्वयं पढ़ाया करते थे। हम में से किसी को भी याद न था कि पाँचवी श्री श्रेणी में कभी भी उन्हें, किसी गलती के कारण किसी की 'चमड़ी उधेड़ते' देखा अथवा सुना हो (चमड़ी उधेड़ना हमारे लिए बिल्कुल ऐसा शब्द बन गया था जैसे हमारे 'सरकारी मिडिल स्कूल' का नाम) अधिक से अधिक वे गुस्से में बहुत जल्दी-जल्दी आँखे झपकाने लगते, अपने लम्बे हाथ की उल्टी उंगलियों से एक 'चपत' हमारे गाल पर मार देते तो मेरे जैसे सबसे कमजोर शरीर वाले बच्चे भी सिर झुकाकर मुँह नीचा किये हँस देते। वह चपत तो जैसे हमें भीखे भाई की उस नमकीन पापड़ी जैसी मजेदार लगती जो तब एक पैसे की शायद दो आ जाया करती थीं।

(ख) मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य आदिम काल से ही अपने एक विशेष समूह में रहता आया है। सामाजिकता के नाते ही मनुष्य एक-दूसरे से आपसी सम्बन्धों से जुड़े रहते हैं। ये सभी सम्बन्ध घर परिवार में ही बन जाते हैं। इन सम्बन्धों को बनाए रखने के लिए सामाजिक व्यवस्था आवश्यक है। इतना ही नहीं, मानवीयता के पोषक ये सभी सम्बन्ध अपनों के सुख-दुख, आपदा, विपदा में, हारी-बीमारी में, हर्ष-उल्लास में काम आना सिखाते हैं। एक-दूसरे को उन्नत जीवन का मार्ग प्रशस्त करने की सीख और अवसर देते हैं। इनसे परस्पर सहयोग, अपनेपन एवं सहृदयता की समझ और संस्कार पैदा होते हैं। समाज में

माँ-बाप, भाई-बहन, ताऊ-चाचा आदि खून के सम्बन्ध हैं, इसके अतिरिक्त समाज में घरेलू रक्त सम्बन्धों के अतिरिक्त अन्य सम्बन्ध भी सभ्य, शिष्ट व सांस्कृतिक चेतना का विस्तार करते हैं। हर व्यक्ति इनकी अवहेलना करने से न केवल, स्वयं का बल्कि समाज का बड़ा ही अहित होता है। इस प्रकार समाज में रिश्तों की विशेष अहमियत है।

खण्ड 'ग'

5. (क) देखें सेट II 5 क।

(ख) पौने दो घन्टे बाद —क्रिया विशेषण, पदबन्ध।

(ग) **पदपरिचय**

मकान में—जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, अधिकरण कारक, रहता है क्रिया का कर्म।

एक—संख्यावाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, साँप विशेष्य।

6. (क) **रचना के अनुसार वाक्य भेद—**

(i) जहाँ न जाय रवि, वहाँ जाय कवि— मिश्रवाक्य।

(ii) चोर घर में घुसा और चोरी करने चला गया—संयुक्त वाक्य।

(ख) **निर्देशानुसार वाक्य रुपान्तरण—**

(i) संयुक्त वाक्य—उसने दिन रात मेहनत की और इतना धन कमाया।

(ii) मिश्र वाक्य में — जो मित्र के दुख में दुखी होते हैं वे सच्चे मित्र कहलाते हैं।

7. **निर्देशानसार उत्तर—**

(क) **सन्धि—**गणेशोत्सव, धनागम।

(ख) **सन्धि-विच्छेद—**महा+अनुभाव, चन्द्र +उदय।

(ग) **समाज विग्रह—**शक्ति के अनुरूप।

ग्राम की पंचायत।

(घ) **समास का नाम—**महासागर—महान है जो सागर (कर्मधारय समास)

जीव-जन्तु—जी और जन्तु (द्वन्द्व समास)

8. (क) **मुहावरे एवं लोकोक्तियों का प्रयोग—**

(i) रंग में भंग होना (खुशी में बाधा पड़ना)

प्रयोग—लड़के होली से पहले छुट्टी होने पर रंग गुलाल उड़ा रहे थे, अचानक प्रधानाचार्य के आने से रंग में भंग पड़ गया।

(ii) पीठ दिखाना (हारकर भागना)

प्रयोग—सच्चे शूरवीर युद्ध के मैदानों में छाती पर गोली खाते हैं, परन्तु पीठ नहीं दिखाते।

(iii) सौ सुनार की एक लुहार की (बलवान की ताकत अधिक होती है)

प्रयोग—एक आदमी लोगों को दुखी करता रहता था उसे बार-बार समझाते हैं नहीं मानने पर एक दिन एक बलवान ने पकड़ लिया और डंडों से मारा, सच है सौ सुनार की एक लुहार की।

(iv) गुदड़ी के लाल (गरीब परिवार में गुणवान होना)

प्रयोग—लाल बहादुर शास्त्री ने प्रधानमंत्री के पद पर पहुँचकर सिद्ध कर दिया कि वे गुदड़ी के लाल थे।

(ख) **रिक्त पूर्ति मुहावरे और लोकोक्ति से—**

(i) शलभ को आता जाता कुछ नहीं, बसह करता रहता है, इसे ही कहते हैं **थोता चना बाजै घना।**

(ii) बेटे की शैतानियों ने पिता की **नाक में दम कर** दिया।

9. **शुद्ध वाक्य –**

(क) उस दुकान में गाय का ताजा दूध मिलता है।

(ख) नेताजी के गले में गुलाब की एक माला पहनाई गई।

(ग) वे लोग दिल्ली में रहते हैं।

(घ) दुर्जन व्यक्ति का साथ छोड़ दें।

16. (क) शाम को हरिहर काका के भाई जब खेत खलिहान से लौटे तब उनको इस दुर्घटना का पता चला। पहले तो वे अपनी पत्नियों पर खूब बरसे, फिर एक जगह बैठ कर सब चिंतामग्न हो गए। हालाँकि गाँव के किसी आदमी ने भी उनसे कुछ नहीं कहा था। मंहत जी ने हरिहर को क्या कुछ समझाया है। इसकी भी जानकारी उन्हें न थी। लेकिन इसके बावजूद उनका मन शंकालू और बड़ा बेचैन हो गया। दरअसल कई ऐसी बातें होती हैं, जिनकी जानकारी बिना दिये ही लोगों को मिल जाती हैं। शाम होते-होते हरिहर काका के तीनों भाई ठाकुरबारी जा पहुँचे। उन्होंने हरिहर को वापिस घर चलने के लिए कहा। लेकिन उनके भाई उन्हें घर ले जाने के लिए जिद करने लगे। इस पर ठाकुरबारी के सब साधु-संत उन्हें समझाने लगे और अंततः भाइयों को निराश हो वहाँ से लौटना पड़ा।

(ख) यद्यपि हरिहर काका अनपढ़ थे। परन्तु वे दुनियादारी की अच्छी समझ रखते थे। महंत और भाईयों की करतूतों से वे यह समझने लगे थे कि उनके भाई या महंत उनको जो सम्मान दे रहे हैं, उसका मुख्य कारण उनकी मृत्यु के बाद उनके पीछे रह जाने वाली पन्द्रह बीघे जमीन है, जिसे वे सभी अपने-अपने तरीके से हड़पने को तत्पर हैं। हरिहर काका जन चुके थे कि उनके भाईयों और महंत का उनसे कोई सगे-सम्बन्धियों जैसा व्यवहार सम्बन्ध नहीं अपितु उनकी स्वार्थ-लिप्सा पूर्ण प्रवृत्ति है। दूसरे लोग उन्हें जायदाद की वजह से पूछते हैं, न कि पारस्परिक आत्मीय सम्बन्धों की वजह से। वे जान गए थे कि जायदादहीन भाई को कोई नहीं पूछता है। महंत पुजारियों और उनके अन्य सहयोगियों की लोभ-प्रवृत्ति को भी वे भली-प्रकार देख चुके थे। उन्हें यह समझ आ चुकी थी कि साधु बने ये लोग कुकर्मी हैं। ये सभी छल, बल, कल, किसी भी तरह धन अर्जित कर। बिना परिश्रम किए आराम से रहना चाहते हैं। इसलिए हरिहर काका ने अपना मन बना लि कि अब महंत, पुजारियों को अपने पास फटकने तक न देंगे। साथ ही जिन्दगी भर अपनी जायदाद अपने भाईयों के नाम भी नहीं लिखेंगे। नहीं तो ये लोग हरिहर काका को दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंकेगे और इस तरह उनका बुढ़ापा और दुख बिताए भी नही बीतेगा।

(ग) जब रामदुलारी टोपी को मार रही थी तो मुन्नीबाबू और भैरव तमाशा देख रहे थे और मुन्नीबाबू ने चुगली खाई कि इफ़्फ़न कबाबची की दुकान पर कबाब खा रहा था। रामदुलारी घृणा कर पीछे हट गई। टोपी बाबू मुन्नी की ओर देखने लगा क्योंकि असलियत तो यह थी कि टोपी ने मुन्नी के कबाव खाते देख लिया था और मुन्नी बाबू ने उसे एक इकन्नी रिश्वत में दी थी। टोपी बाबू को यह भी पता था कि मुन्नी बाबू सिगरेट भी पीते हैं परन्तु टोपी बाबू चुगलखोर नहीं था। उसने कोई भी बात इफ्फन के सिवाय किसी से नहीं कही थी।

(घ) सभी लड़के मास्टर प्रीतम सिंह से इसलिए डर रहे थे क्योंकि पीटी मास्टर साहब बड़े ही कठोर प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। अनुशासन भंग करने पर छात्रों को कठोर दण्ड देते थे। छात्रों को घुड़की देना, ठुड्डे मारना, उन पर वाघ की तरह झपटना, खाल खींचना आदि सजाऐं देना उनके लिए सहज था वे यह भी नहीं पसंद करते थे कि कोई बच्चा लाइन तोड़े या टेड़ा खड़ा हो। पीटी साहब फारसी का काम भी डंडे से कराते थे बच्चों को भरी दोपहरी में मुर्गा भी बना देते थे।

17. (क) गुरुदयाल सिंह जी की आत्मकथा के समय की और वर्तमान काल की शिक्षण पद्यति में मूलभूत परिवर्तन हुआ है। प्राचीन समय में विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए कठोर दण्ड दिया जाता था। यह दण्ड प्रायः शारीरिक रूप में होता था। जैसे मुर्गा बनाना, गाल पर थप्पड़ मारना, डंडे मारना, ठुड्डे मारना, बुरी तरह पीटना-लताड़ना आदि। इससे बच्चों का मानसिक चेतनाओं से भी गुजरना पड़ता था, भय से वे स्कूल नहीं आते थे या पढ़ाई से विमुख हो जाते थे। परन्तु वर्तमान काल में शारीरिक दण्ड पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लग चुका है। अब बच्चों को अनुशासन में रखने के लिए मानसिक संस्कार पर बल दिया जाता है। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को पुरस्कार दिया जाता है। अभय, असभ्य, आचरण करने वाले बच्चों की निन्दा करके उसे हतोत्साहित किया जाता है ताकि वह भविष्य में गलतियाँ न दोहराए।

(ख) टोपी और इफ्फ़न की दादी अलग-अलग मज़हब और जाति की थी परन्तु दोनों ही धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। दोनों ही अपने-अपने धर्म के अनुसार धार्मिक रीति-रिवाजों तथा मान्यताओं को कठोरता से अपनाती थीं। इसके बावजूद टोपी की दादी इफ्फ़न से और इफ्फन की दादी टोपी से बहुत प्यार करती थीं। उनको बच्चों के एक-दूसरे के घर जाने में, साथ-साथ रहने में कोई नफरत नहीं थी। दोनों ही वयोवृद्धा थीं। दोनों ही संवेदनाओं की धनी थीं। दोनों ही अपने बेटे-बेटियों के प्रति बहुत जागरूक थीं। दोनों ही जीवन जीने की कला कहानी सुनाकर कायदे-कानून सिखाती थीं और शिक्षा देती थीं तथा कायदे-कानून, रीति-रिवाज़ें सिखाकर जीवन जीने की कला सिखाती थीं लेखक दोनों के प्रेम सम्बन्धों को कांग्रेस और जनसंघ से भी बड़ा मानता था। कहानी कहने में दोनों ही कुशल थीं।

● ●